10 मोदी के दिवाने हुए ओबामा

25 दिल्ली में रहते है सबसे अमीर लोग

32 झरोखा अनमोल पल

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

नवम्बर, 2014

45 रूपए मात्र

आशा खबर

अब रहें न बेखबर
पढ़ते रहें आशा खबर

अब आपके शहर
इलाहाबाद
से प्रकाशीत

आशा खबर

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वक्रतुण्ड महाकाय सुर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नम् कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा ।

पूण्यतिथि

स्वर्गीयः श्रीमति आशा देवी

9 नवम्बर 2002

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

आशा खबर

सच का दम

वर्ष-1 अंक 1 नवम्बर 2014

सम्पादक	रजनी कान्त श्रीवास्तव
सलाहाकार सम्पादक	नवीन श्रीवास्तव
सलाहाकार सम्पादक	संजय कुमार श्रीवास्तव
सलाहाकार सम्पादक	पुनीत कुमार शुक्ला
सह सम्पादक	दीपक कुमार सिंह
संवादाता	
उत्तर प्रदेश	विपुल श्रीवास्तव
दिल्ली	मुकेश कुमार कुशवाहा
बिहार	रौशन कुमार
राजस्थान	सत्य नारायण
महाराष्ट्र	रुपेश कुमार
इलाहाबाद	शैलेष त्रिपाठी
भदोही	परवेश श्रीवास्तव
वाराणसी	अमित पांडेय
मिर्जापुर	मृत्युनजय कुमार चौधरी
बलिया	राजेन्द्र श्रीवास्तव
गाजीपुर	अखिलेश शर्मा
कौशाम्बी	प्रमोद कुमार यादव
बांदा	शैलेष कुमार गुप्ता
झांसी	सत्य देव
फतेहपुर	आदित्य मिश्रा
लखनऊ	प्रदीप सिंह
छायाकार	गिरीश चन्द्र
विधि सलाहकार	पी0 सी0 श्रीवास्तव,सुप्रीम कोर्ट शशी शेखर मिश्रा, हाईकोर्ट अवनीश कुमार श्रीवास्तव,हाईकोर्ट धन्नजय कुमार सिंह,जिला कचहरी सत्य प्रकाश उपाध्याय,तहसील रविन्द्र नाथ श्रीवास्तवद्धतहसील
प्रबंधक	अमरीष कान्त श्रीवास्तव
प्रसार प्रबंधक	भान सिंह
तकनीकी प्रबंधक	मोहित कुमार श्रीवास्तव
तकनीकी व्यवस्थापक	कुलदीप कुशवाहा
साज सज्जा प्रबंधक	आराध्या पांडेय
साज सज्जा व्यवस्थापक	रंजीत कुमार केशरवानी

सम्पादकीय कार्यालय

81/6/2ए, चकदोदी, नैनी
इलाहाबाद - 211008
मो0 - 9415680998-0523-2694058
www.asha khabar.com
e-mail :- editor@ashakhabar.com

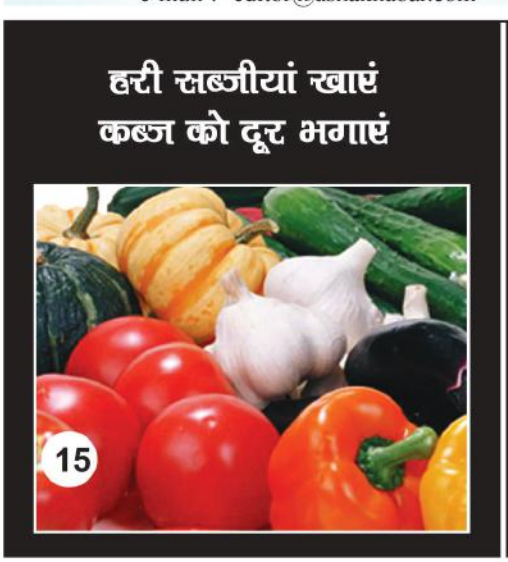

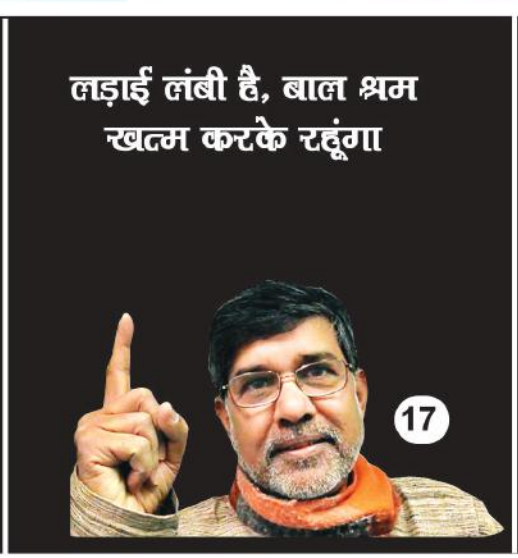

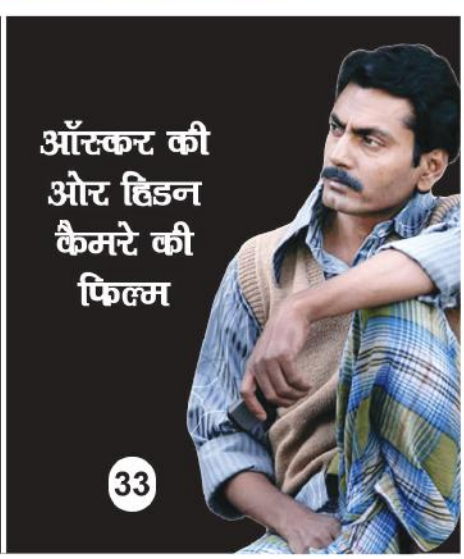

पत्रिका में प्रकाशित समाचारो/ रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार है इससे प्रकाशक/सम्पादक की आम सहमति नही है रचना में कथनो/तथ्यों/आंकड़ों के लिये लेखक स्वयं उत्तरदायी है। उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक तारणी शरण श्रीवास्तव द्वारा भार्गव आफ्सेट प्रेस 2, बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं 81/6/2 ए चकदोदी नैनी इलाहाबाद से प्रकाशित। "सभी वाद-विवाद इलाहाबाद के सक्षम न्यायालय के अधीन मान्य होगा"

हरियाणा और महाराष्ट्र में मोदी मैजिक

पहली बार बीजेपी के नेतृत्व मे बनी सरकार
महाराष्ट्र मे भी बीजेपी ने जीती 100 से अधिक सीटे

महाराष्ट्र और हिरयाणा विधानसभा चुनावो मे भारतीय जनता पार्टी (बीपेजी) के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चुनावी अभियान जादू का काम कर गया और वह दोनों ही राज्यों में सरकार बनाने की तैयारी जुट में गई है। रविवार को आए चुनावी नतीजों के मुताबिक बीजेपी हरियाणा में कुल 90 सीटीं में से 47 सीटें लेकर पहली बार अपने बल-बूते सरकार बनाने जा रही है, जबकि महाराष्ट्र में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आई है। उम्मीद है कि पुराने सहयोगी शिवसेना के साथ मिलकर यहां बीजेपी सरकार बनाने मे सफल रहेगी।इनके बीच दोबारा गठबंधन को लेकर चर्चा भी शुरू हो गई है।

गूंजा हर-हर मोदी का नारा

हरियाणा में 90 सीटों में से बीजेपी ने 47 सीटों पर कब्जा जमाया है। 2009 में बीजेपी को हरियाणा में मात्र 4 सीटें मिली थी। इस तरह मोदी के अभियान की बदौलत उसे 47 सीटों का बडा फायदा हुआ है। वहीं सत्तारूढ कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पडा। और वह 15 सीटों के साथ तीसरे पायदान पर फिसल गई है। 2009 मे उसे 40 सीटें मिली थीं। कांग्रेस के साथी दल और शिक्षक भर्ती घोटाले में तिहाड़ जेल में सजा काट रहे पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के इंडियन नेशनल लोकदल को भी करारी हार का सामना करना पड़ा।

महाराष्ट्र में भी भाजपा की धूम

दूसरी तरफ महाराष्ट्र की कुल 288 सीटों में से भाजपा ने 122 सीटों पर विजय हासिल की और सबसे बड़े दल के रूप में सामने आई। हालांकि वो बहुमत से 23 सीटे पीछे रह गई, लेकिन 2009 मे महज 46 सीटें जीतने वाली पार्टी के लिए यह बहुत बड़ी जीत है। वहीं सीटो के बंटवारे के चलते भाजपा से किनारा करने वाली शिवसेना ने भी बेहतर नतीजे हासिल किए है। और वो 63 सीटों पर जीत के साथ दूसरी सबसे बडी प्रार्टी बन गई है। उधर 15 साल तक महाराष्ट्र की सत्ता पर काबिज रही कांग्रेस प्रार्टी 41 सीटों पर सीमट गई।

महाराष्ट्र विधानसभा-288

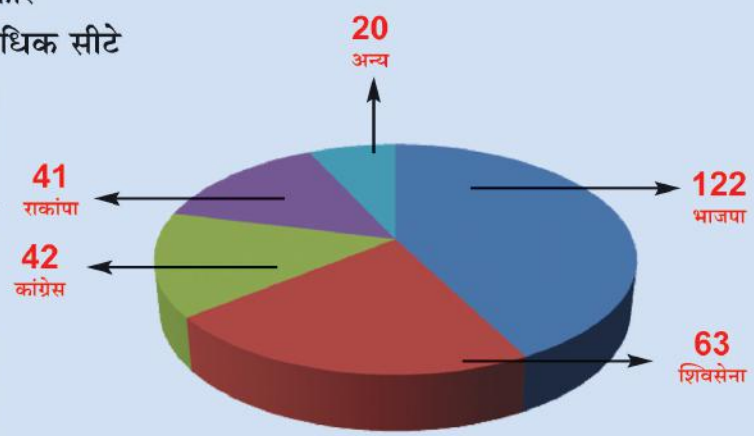

हरियाणा विधानसभा-90

बीजेपी-शिवसेना गठबंधन 170 प्लस सीट?

लगाया सैकड़ा

भाजपा ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सैकड़ा लगाते हुए 1990 के बाद ऐसी उपलब्धि हासिल करने वाली पार्टा बनने का गौरव हासिल किया है इससे पहले 1990 में कांग्रेस ने राज्य में शतक लगाया था, तब कांग्रेस को 141 सीटों मिली थी, इस चुनाव में भाजपा को मिली सीटों की संख्या पिछले चुनाव में उसे और शिवसेना को मिली कुल संख्या से भी अधिक है।

महाराष्ट्र में किसके साथ होगा गठबंधन?

महाराष्ट्र विधानसभा में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभरी है, लेकिन यह बहुमत से थोड़ा दूर रह गई है, ऐसे में बीजेपी और शिवसेना के बीच देबारा गठबंधन के संकेत मिल रहें, एक नजर महाराष्ट्र में सरकार को लेकर चल रहें समीकरण पर.....
बीजेपी और शिवसेना में गठबंधन को लेकर बातचीत भी शुरु हो चुकी है, इसके अलावा बीजेपी चीफ अमित शाह ने भी कांफ्रेस शिवसेना के साथ नरमी के संकेत दिए थे, माना जा रहा है कि दोनों पार्टियों के बीच ढाई-ढाई साल मुख्यमंत्री पद की दावेदारी पी भी मुहर लग सकती है, वही शिव सेना नेता उद्धव ठाकरे ने स्पष्ट संकेत दे दिया है कि वह सरकार बनाने में बीजेपी की मदद करने को तैयार है, उन्होंने कहा कि अगर उन्हें कोई प्रस्ताव मिलता है तो वह उस पर गंभीरता से विचार कर सकते है,उद्धव से जब पूछा गया कि क्या वह बीजेपी के साथ जा सकते है तो उन्होने ने कहा मुझे अभी तक कोई प्रस्ताव नही मिला है लेकिन प्रस्ताव मिला तो सोच सकते है, उद्धव ने बार-बार कहा कि वह खुद प्रस्ताव लेकर बीजेपी के पास नही जाएगें लेकिन सामने से कोई प्रस्ताव आया तो वह विचार करेगें, बीजेपी को यदी एनसीपी पसंद है तो वो जाने के लिए स्वतंत्र हैं।

बीजेपी-एनसीपीगठबंधन (160 प्लस सीट)

दूसरा समीकरण बीजेपी और एनसीपी को लेकर बन रहा है, एनसीपी के प्रफुल्ल पटेल ने भी रविवार को बयान दिया है कि चूंकि बीजेपी राज्य में सबसे बड़ी पार्टी के रुप में उभरी है, इसलिए राज्य में स्थिर और प्रगतिशील सरकार बनाने के लिए एनसीपी बीजेपी को बाहर से समर्थन देगी, चुनाव पूर्व सर्वे के सभी आकलनों में काग्रेंस और एनसीपी की हार का अनुमान लगाया गयाथा,लेकिन दोनों दलों ने उम्मीद से कही बेहतर प्रर्दशन किया है।

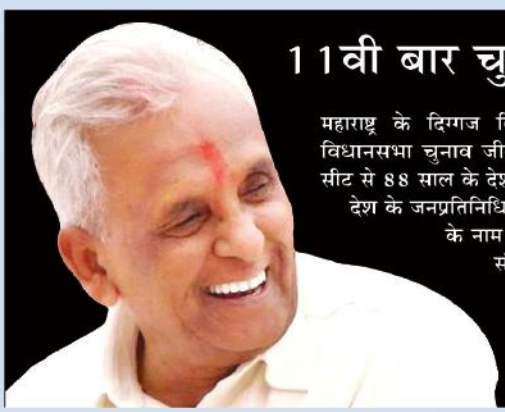

11वी बार चुनाव जीतने का रिकॉर्ड

महाराष्ट्र के दिग्गज विधायक गणपतराव देशमुख ने 11वी बार विधानसभा चुनाव जीतकर इतिहास बनाया, सोलापुर जिले की संगोला सीट से 88 साल के देशमुख 2009 में 10 वी बार विधायक बनने वाले देश के जनप्रतिनिधि थे, इससे पहले डीएमके अध्यक्ष एम करूणानिधि के नाम 10 चुनाव जीतने का कीर्तिमान था 54 साल से संगोला का प्रतिनिधित्व कर रहे पीजेट्स एंड वकर्स पॉर्टी के नेता ने शिवसेना के शाहजीबापू पाटिल को 25224 मतो के अंतर से विजय प्राप्त की। देशमुख के खिलाफ एनसीपी ने अपना उम्मीदवार मैदान में नही उतारा था।

3 वोट से जीता कांग्रेस कैडीडेट

हरियाणा में मुंह की खाने वाली कांग्रेस का एक प्रत्याशी खुद भी अपनी जीत पर बेहद हैरान है, सोनीपत जिले की राई विधानसभा सीट के कांग्रेस उम्मीदवार जय तीरथ दहिया मात्र तीन वोटो से जीते सकें, उन्होंने इंडियन नेशनल लोकदल के उम्मीदवार को हराया, निर्वाचन आयोग की ओर से जारी किए गए नतीजों के परिणामों के 62 साल के दहिया को 36703 वोट मिले, इनेलों के इंद्रजीत दहिया 36700 वोट हासिल कर दूसरें नबंर पर रहें, बीजेपी की कृष्ण गहलोत 34523 वोट पाकर तीसरे नबंर पर रही।

हरियाणा में इसलिए जीती भाजपा

- मोदी लहर का व्यापक असर । मोदी ने खुद 11 रैलियां की।
- जनता ने परिवारवाद की राजनीति को नकारा।
- डेरा सच्चा सौदा का भाजपा को समर्थन।
- जाट बाहुल्य इलाकों में भाजपा ने लगाई सेंध।
- कांग्रेस की दस साल से कायम सत्ता विरोधी लहर।
- जमीन घोटाले और भ्रष्टाचार से हुए बदनाम।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

भाजपा का दोहरा जश्न

जनता ने इस बार बदलाव के लिए वोट दिए है। कांग्रेस इस चुनाव से असंतुष्ट है। और जमीनी स्तर पर कड़ी मेहनत करेगी। ताकि फिर वह जनता का विश्वास हासिल कर सके।

राहुल गांधी (महासचिव कांग्रेस)

हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव नतीजो ने भाजपा को दोहरी खुशी का मौका दिया है। एक तो वह दोनो राज्यों में सत्ता सभालने जा रही है और दूसरी कांग्रेस संकट की ओर बढ़ रही है। कांग्रेस का यह संकट झारखण्ड और जम्मू-कश्मिर के विधानसभा चुनावों में अधिक गहरा सकता है।आम चुनावों के बाद हुए तीन उपचुनावों में भाजपा की हार से कांग्रेस और शेष विपक्षी दलों के मान लिया था कि अब मोदी लहर नही चलने वाली लेकिन ताजा चुनाव परिणामो को देखते हुए कांग्रेस को नए सिरे से सोचना होगा । यदि यही स्थिति रही तो बचे छह-आठ राज्यों के भी कांग्रेस के हाथ से खिसकने में अधिक वक्त नही लगेगा। भाजपा की छवि और मोदी के नेतृत्व के चलते पूरे देश में एक अलग तरह का माहौल है और निस-देह इस जीत का श्रेय मोदी को ही है। अब अटल-आडवाणी युग का अंत और मोदी युग की शुरुआत हो चुकी है। भाजपा की कोशिश यही है कि अब 2019 में आम चुनाव हो तो उसके मुकाबले में सिर्फ कांग्रेस ही रहे, इसलिए जरुरी है कि राज्यों में अन्य श्रेत्रीय दलो की सरकारो की जगह भाजपा को स्थगित किया जाए। इससे आम चुनावों के समय कांग्रेस को पटकनी देना भाजपा के लिए अधिक आसान होगा। कांग्रेस शासित राज्यों और अन्य क्षेत्रीय दलो की सरकारों का खात्मा होने से भाजपा को राज्यसभा में भी बहुमत हासिल करने में मदद मिलेगी। मोदी इसी रणनीति के तहत आगें बढ़ रहे है और हरियाणा व महाराष्ट्र के चुनाव नतीजो ने उनकी इस सोच को मजबूती प्रदान की है। जहां तक कांग्रेस की दोबारा वापसी की बात हैतो देखा यही गया है कि जिन राज्यों में भी उसका मत प्रतिशत 20 फीसद से नीचे गिराहै वहां उसका उभार नही सका है। इसलिए उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, तमिलनाडु जैसे राज्यों उसकी हालत खराब है। एक राष्ट्रीय पार्टी केरुप में कांग्रेस का आधार तेजी से सिकुड़ रहा है। नेतृत्व के अभाव से जूझ रही कांग्रेस के लिए स्थिति चिंताजनक है। इसमें दो राय नही मोदी अच्छे वक्त है और विकास, युवाओं के लिए नौकरी व आर्थिक प्रगति को महत्व देने के कारण वह सबसे लोकप्रिय और पसंदीदा नेता के तौर पर उभरे है। जनता पर उनकी बातो का असर होता है और लोग उनके नाम पर वोट देते है। हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव परिणाम इसकी एक और बानगी है।

चला अमित शाह का सिक्का

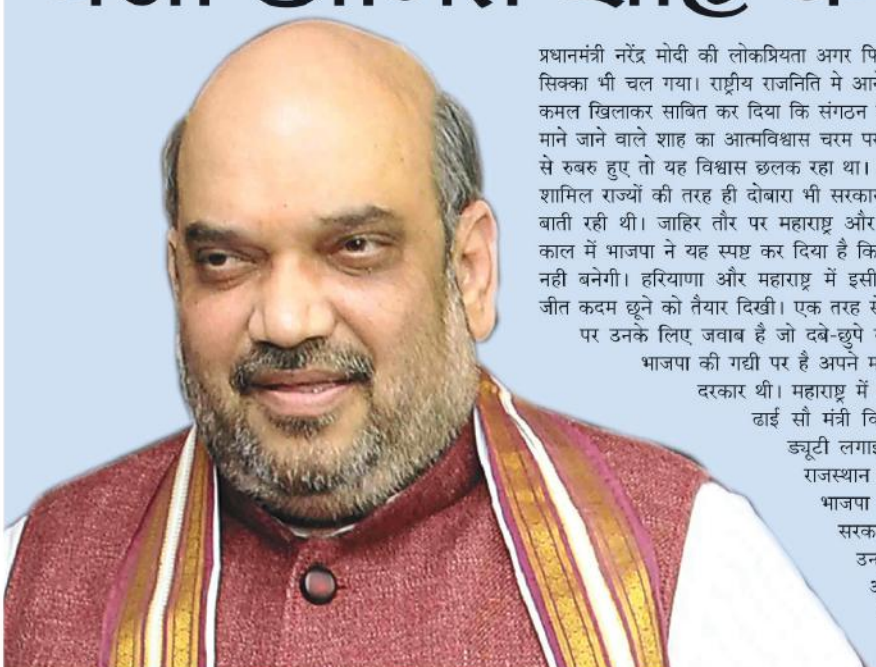

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता अगर फिर से कसौटी पर खरी उतरी तो भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के नाम का सिक्का भी चल गया। राष्ट्रीय राजनिति मे आने के महज डेढ़ दो साल में शाह ने महाराष्ट्र और हरियाणा जैसे राज्यों में कमल खिलाकर साबित कर दिया कि संगठन मे भाजपा को शाह जैसे नेता की ही खोज थी। माइक्रो मैनेजमेंट के माहिर माने जाने वाले शाह का आत्मविश्वास चरम पर है। महाराष्ट्र और हरियाणा में जीत सुनिश्चित होने के बाद वह मीडिया से रुबरु हुए तो यह विश्वास छलक रहा था। उन्होने कहा 'हम दोनो जगह सरकार बनाने जा रहे है और दूसरे भाजपा शामिल राज्यों की तरह ही दोबारा भी सरकार बनाएगें। शायद इसी आत्मविश्वास की कमी अब तक भाजपा में नजर बाती रही थी। जाहिर तौर पर महाराष्ट्र और हरियाणा की जीत अहम है, लेकिन उससे भी आगे बढ़कर शाह के काल में भाजपा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि दबाव में काम नही करेगी और अपनी कीमत पर दूसरों के लिए सीढ़ी नही बनेगी। हरियाणा और महाराष्ट्र में इसी मंशा के साथ पार्टी ने गठबंधन टूटने का भी गम नही मनाया तो जीत कदम छूने को तैयार दिखी। एक तरह से इस जीत के साथ शाह अपनी अग्निपरीक्षा पास कर चुके है। खासतौर पर उनके लिए जवाब है जो दबे-छुपे यह बोलने से बाज नही आते थे कि मोदी से नजदीकी के कारण शाह भाजपा की गद्दी पर है अपने माइक्रो मैनेजमेंट के जरिए शाह ने साबित कर दिया कि पार्टी को उनकी दरकार थी। महाराष्ट्र में मोदी की रैलियो को सफल बनाने और जमीनी स्तर पर प्रबंधन के लिए ढाई सौ मंत्री विधायक व दूसरे नेताओं को मैदान मे उतार दिया था। क्षेत्रवार उनकी ड्यूटी लगाई थी जो हर छोट बड़े फैसले के क्रियान्वयन की निगरानी कर रहे थे। राजस्थान मध्य प्रदेश छत्तीसगढ गुजरात गोवा के बाद महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा की अकेली सरकार है। पंजाब में अकाली दल के साथ गठबंधन की सरकार । नरेंद्र मोदी और शाह के तेवर साफ बताते है कि झारखण्ड में भी उन्होने अपनी रणनीति तय कर ली है। अगले साल के अंत तक बिहार और फिर पश्चिम बंगाल में कमल खिलाना शायद उनकी प्राथमिकता सूचि में सबसे उपर है।

अभिनेत्री से सत्ता तक का सफर

एक शर्मीली अभिनेत्री तारिका से तीन बार मुख्यमंत्री चुने जाने तक का लंबा सफर तय करने वाली जयललिता जयराम ने अपने चार दशक के लंबे राजनीतिक कैरियर में काफी उतार चढ़ाव देखे है।

बखूबी निभाई परिवारिक जिम्मेदारी

पिता की मौत के बाद जललिता परिवारिक जिम्मेदारी निभाने के लिए पढ़ाई में अव्वल रहने के बावजूद जयललिता ने 15 साल की उम्र में अपना फिल्मी करियर शुरू कर दिया। जयललिता अपने फिल्मी कैरियर की शुरूआत वेन्नीरादई से की यह उनकी पहली फिल्म थी। जयललिता 28 फिल्मों में अन्नादुमुक के संस्थापक एमजी रामचंदन ' एमजीआर ' की नयिका बनी दोनों की जोडी ने सिनेमा से आगे निकलकर काम किया। और राजनीतिक में भी निकलकर रंग जमाया।

राजनितिक जीवन

एमजीआर की विरासत को हासिल करने वाली जयललिता का राजनितिक जीवन तमाम विरोधियों से गुजरते हुवे इस मुकाम पर पहुंचा है। अन्नामुदक में शामिल होने के एक साल बाद 1983 में पार्टी का प्रचार सचिव बना दिया गया। इसके बाद जया कि राज्यसभा के लिए नामित किया गया। हालांकि कुछ ही समय बाद दोनों के बिच मतभेदों का खबर आने लगी। लेकिन 1984 में एमजीआर के बिमार पड़ने पर जयललिता ने ही पार्टी के चुनाव अभियान की कमान संभाली थी।

छीनी राजनितिक विरासत

वर्ष 1987 में अन्नाद्रमुक संस्थापन के निधन के बाद एमजीआर की पत्नी जानकी के समर्थकों ने जयललिता का जमकर विरोध किया। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और राजनीतिक विरासत छिनकर हासिल की । पार्टी का विभाजन हो गया। पार्टी महासचिव होने के नाते वह वर्ष 1989 में तमिलनाडू के निर्वाचन क्षेत्र बेदिनायकनूर से राज्य विधानसभा चुनावों के लिए खड़ी हुई। चुनाव जितने के बाद वह राज्य विधानसभा की पहली नेता विपक्ष बनी।

राजीव हत्या की सहानुभूति को भुनाया

वर्ष 1991 में राजवी गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति की उन्होंने कांग्रेस से गठबंधन करके भुनाया। जयललिता ने चुनावों में भारी अंतर के साथ जीत दर्ज की और राज्य की मुख्यमंत्री बनाई गई। तमिलनाडू की अब तक की सबसे कम उम्र की मुख्यमंत्री बनने का खिताब जयललिता के नाम है।

18 साल बाद जयललिता पाई गई दोषी

- 14 जून 1996 तत्कालिन जनता पार्टी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने जयललिता के पास ज्ञात श्रोतो से अधिक संपति का आरोप लगाया।
- 991–1996 तक सस्ता में रहने के बाद जब जयललिता ने पद छोडा तो उनकी उनकी सम्पत्ती बढ़कर 66.65 करोड़ रूपये हो गई थी, जो उनके ज्ञात श्रोत से अधिक थी।
- 18 सितंबर 1996 पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की और जांच की गई। जिसमें हेदराबाद सहित विभिन्न स्थानों पर छापेमारी की कार्रवाई भी की गई।
- 7 दिस्मबर, 1996 जयललिता गिरफ्तार हुई।
- 1997: अदालत ने जयललिता, वीएन सुधाकरन वीके शशिकला ओर जे. इलावरासी के विरूद्ध आरोप तय किए।
- मई 2001: राज्य विधानसभा चुनाव में एआइएडीएमके की जीत के बाद जयललिता मुख्यमंत्री बनी।
- 21 सितंबर 2001: तमिलनाडू स्माल इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन संबंधी धांधली में संलिप्तता के कारण मुख्यमंत्री पद छोडा। 2002 में पुनः मुख्यमंत्री पद पर काबिज हुई।
- 2003: डीएमके नेता के.अनबक्षगन ने मामले को चेन्नई से बाहर स्थानांतरित करने के लिए सुप्रीम कार्ट में अपील की।
- 18 नवंबर 2013: सुप्रीम कार्ट ने मामल को बेंगलूर स्थानांतरित करने का आदेश दिया। वहां विशेष अदालत में मामल की सुनवाई शुरू हुई।
- 19 फरवरी 2005: कर्नाटक सरकार ने बीवी आचार्य को विशेष लोक अभियोजक एसपीपी
  नियुक्त किया।
- 2011: विधानसभा चुनावों में जीत के बाद जयललिता फिर मुख्यमंत्री बनी।
- अक्टूबर/नवंबर 2011: जयललिता अदालत के समक्ष पेश हुई और 1,339 सवालों के जवाब दिए।
- 12 अगस्त 2012: आचार्य ने एसपीपी पद से इस्तीफा दिया। जनवरी, 13 में इस्तीफा स्वीकृत।
- 2 फरवरी 2013: कर्नाटक सरकार ने जी. भवानी सिंह को एसपीपी नियुक्त किया।
- 28 अगस्त 2014: सुनवाई पूरी हुई और फैसले की तारीख 20 सितंबर 2014 तय की गई। बाद में इसे बढ़ाकर 27 सितंबर किया गया।
- 27 सितंबर 2014: जयललिता समेत चार दोषी।

अमेरिका में छा गये मोदी,

अमेरिका धरती पर खासी धूम मचाने के बाद मोदी सरकार ने साफ संकेत दिए हैं कि वह वाशिंगठन के साथ हाथ मिलाने के लिए काफी आगे बढने को तैयार है। पढ़ें अंदर की पूरी दास्तान

प्रधानमंत्री नरेंद मोदी आम तौर पर सरकारी बैठकों में अपने अधिकारियों कां शांत रहकर ध्यानपूर्वक सुनते है। लेकिन पिछले दिनों एक बैठक के दौरान उन्हें खास तौर पर अपनी बात कहते सुना गया। इस बैठक में विदेश मंत्रालय के अधिकारी उन्हें विस्तार के साथ बता रहे थे कि अमेरिका, जापान और चीन के साथ समान दूरी बनाकर चलने की नीति क्यों बेहतर होगी। करिबियों के मुताबिक, मोदी ने कहा कि ऐसी नीति हमारे लिए अच्छी और वांछित तो हो सकती है लेकिन लंबे समय तक टिकेगी नहीं, उनका कहना था हकि अंतर्विरोध जल्दी ही उभरकर सामने आ जाएंगे और एक हद से आगे संतुलन साधकर चलना मुश्किल हो जाएगा। यह मोदी की जापान यात्रा से पहले कि बात है। इसी यात्रा से उच्चस्तरीय राजनयिक मुलाकातों का सिल. सिला शुरू हुआ था। हालांकि यह विचार बातचित में फिर कभी उभरकर नहीं आया, लेकिन मोदी की अमे. रिका यात्रा से साफ हो गया कि वे चाहते क्या हैं। शोर–शराबे, धूम–धड़ाके और गर्जनाओ के बाद के बाद जब तफसील से बात की गई तो मोदी सरकार ने संकेत दिए कि वे वाशिंगठन के साथ हाथ मिलाने के लिए अपने हिस्से की आंधी दूरी तय करने को तैयार हैं। यहीं नहीं, वे इससे भी ज्यादा आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। ताकि अमेरिका के साथ ऐसा रिश्ता कायम कर सके। जैसा ऐतिहासिक परमाणु संधि के बावजूद यूपीए सरकार भी नहीं कर सकी थी। समझा जाता है कि मोदी ने तैयारियों की शुरूआत में ही साफ कर दिया था कि भारत को ऐसे इनकार करने वाले देश की तरह नहीं देखा जा सकता जो वैश्विक मंचों पर हर एक अमेरिकी पहल का विरोध करता है। यह संदेश वाशिंगटन पोस्ट अखबार में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ संयुक्त संपादकीय लिखने जैसे साधारण–से मुद्दे के दौरान भी साफ हो गगा। शुरूआत में योजना यह थी कि सामान्य परम्परा के मुताबिक प्रधानमंत्री का लिखा हुआ एक लेख प्रतिष्ठित अमेरिकी अखबार में छपवाया जाए। यह लेख लिख लिया गया और छपने के लिए मंजूर भी हो गया। तभी अमे. रिकी पक्ष ने इस लेख में कुछ बातें जोड़ते हुए ओबामा के साथ संयुक्त लेख का विचार सामने रखा। एक अंग्रेजी पत्रिका के अनुसार अंदर के लोग बताते हैं कि अमेरिका में भारतीय मिशन और कुछ अन्य अधिकारी इस सुझाव के पक्ष में थे। लेकिन प्रधानमंत्री के कार्यालय के कुछ अधिकारियों सहित साउथ ब्लॉक के वरिष्ठ अधिकारी असहज महसूस कर रहें थे। उन्होने 'समान दूरी' और पश्चिम परस्त होने की धारणा के नतीजों को लेकर सवाल उठाए, मामला आखिरकार मोदी की मेज पर पहुंचा। सूत्र बताते है कि उन्हें संयुक्त लेख की मंजूरी देने में एक मिनट से भी कम समय लगा। बस फिर क्या था। करने को सिर्फ इतना बचा था कि दोनों पक्षों की बातों को एक संयुक्त लेख में स्वीकार्या ढंग से जोड़ दिया जाए।

नही कहने वालों का नहीं

करीब एक साल पहले यूपीए सरकार के योजना आयोग के प्रभावशाली उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलुवालिया केउस वक्त काग्रंस और मंत्रिमंडल के सदस्यों का भारी आकोश झेलना पड़ा था। जब उन्होंने मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत रेफीजरेंट्स और हाइड्रोफलूरोकार्बस एचएफसी को चरणबद्ध तरीके से हटाने पर चर्चा के लिए जी–20 की एक अधिकारिक सूचना का अनूमोदन कर दिया था। उन्हें करीब–करीब विकासशील देशों को विकास के लिए जरुरी टेक्नोलॉली से वंचित करने के पश्चिमी एजेंडे के आगे घुटने टेकने का दोषी ठहराया गया था। उनके आलोचकों ने तब प्रधानमंत्री मनमोहन सिहं

दीवाने हुए बराक ओबामा

तक को इस विवाद में घसीट लिया था क्योंकि अहलुवालिया ने जी–20 की बैठक में मनमोहन के दाहिने हाथ के रूप में दोहरी भूमिका निभाई थी।

यह विवाद तब और भी गंभीर मुद्दा बन गया जब पर्यावरण मंत्रालय और कुछ हद तक विदेश मंत्रालय भी इसमें कूद पड़े और उन्होंने दलील दी कि इससे जलवायु परिवर्तन पर भारत के व्यापक रूख को जोखिम में डाल दिया गया है। इसका नतीजा यह हुआ कि पिछले साल जब मनमोहन ने अमेरिका की यात्रा की तो उन्हें अपनी राजनैतिक जमा–पूंजी का खासा इस्तेमान करते हुए कुछ मोहलत हासिल करने के लिए दोतरफा बातचित का रास्ता खोलना पड़ा ताकि भारत सरीखे विकासशील देशों पर दूरगामी असर डालने वाले इस संवेदनशील मुद्दे के विभिन्न पहलुओं की जांच पडताल की जा सके। मोदी के आने के साथ स्थिति बदल गई। पर्यावरण मंत्रालय ने अब भी मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के खिलाफ सख्त रुख अपनाया, इसके तहत एचएफसी को चरणबद्ध तरीके से हटाने पर चर्चा की तो बात ही छोड़ दें। मंत्रालय ने तो यहां तक दलिल दी कि चीन का भी वही रूख है जो हमारा है और दोनो देश मिलकर अंतराष्ट्रीय मंच पर जबरदस्त साबित हो सकते है। यह अलग बात है कि मंत्रालय भूल गया कि बीजिंग आखिरी क्षणों में दोतरफा सौदेवाजी के लिए जाना जाता है। सूत्र बाताते है कि प्रधानमंत्री ने सुझाव को एक झटके में नामंजूर कर दिया। उन्होंने कहा कि भारत वैश्विक महत्व के मुद्दों पर इतना संकीर्ण रवैया अख्तियार नही कर सकता। नतीजा यूँ हुआ कि भारत ने भारत–अमेरिका संयुक्त वक्तव्य में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत संस्थाओं की शुचिता का अनुमोदन कर दिया और एचएफसी को चरणबद्ध तरीके से हटाने की चर्चा के लिए कदम से पहले फौरन दोतरफा बातचीत का आयोजन किया जाएगा जिसमें एचएफसी को हटाने के लिए नई टेक्नोलॉजी की सुरक्षा, लागत और व्यावसायिक पहुंच, पर विचार किया जाएगा।

इसी तरह फार्म सब्सिडी और विश्व व्यापार संगठन में कृषि पर चर्चा के राजनैतिक रूप से ज्यादा संवेदनशील मुद्दे पर भी मोदी समझौते करने के लिए कहीं ज्यादा तैयार थें। खासकर उस वक्त जब इसे वाणिज्य मंत्रालय की सिफारिशों की रोशनी में देखा जाए। सूत्र बताते है कि मंत्रालय चाहता था कि ऐसी दूरगामी छूटों और रियायतों के लिए आवाज उठाई जाए जो न सिर्फ मौजूदा कार्यक्रमों पर बल्कि निकट भविष्य की नई योजनाओं पर भी लागू हों। वह चाहता था कि कृषि सब्सिडी के समूचे ढांचे को नए सिरे से तय किया जाए। इसके मायने होते पहले के तमामसमझौतों को दोबारा खोलना और यह अप्रसार संधि को तार–तार कर देने के बाराबर होता। इससे बातचीत शुरू होने से पहले ही बिखर जाती। ज्यादा अहमयह कि ऐसे प्रस्ताव की पेशकश मात्र से ही अमेरिका को अलग तरह का संदेशअ जाता। प्रधानमंत्री हालात को और ज्यादा बिगाड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने तय किया कि यह बारीकियों में जाने का समय नहीं है। इसकी बजाए उन्होंने एक ओर व्यापार सुविधा समझौतों का खुला समर्थन करके और दूसरी ओर विश्व व्यापार संगठन और कृषि पर ज्यादा खुले दोतरफा संवाद के लिए जोर देकर मुद्दे को सकारात्मक रूख दिया।

मोबाइल पर फ्री में देखने को मिलेंगे चैनल

सार्वजनिक प्रसारणकर्ता दूरदर्शन 20 फ्री टू एयर चैनलों का सीधे मोबाइल पर प्रसारण करने की योजना बना रहा है। दूरदर्शन की निजी मीडिया समूहों के साथ मिलकर अगले साल तक मोबाइल पर सुविधा देने की योजना है। प्रसार भारती के सीईओ जे सिरकर ने सीआइआइ की बिग पिक्चर समिट से इतर प्रत्रकारों को बताया कि फिलहाल डिश, केबल और एंटीना के विकल्प हैं। चौथे विकल्प के रूप में डिजिटल एंटीना देने का विचार है। इसके तहत 20 मुफ्त चैनल इसी साल से टीवी पर देखे जा सकेंगे। अगले साल से ये मोबाइल पर उपलब्ध होंगे। मोबाइल फोन पर चैनल दिखाने की सुविधा की शुरूआत मुंबई और दिल्ली से होगी। सभी फ्री टू एयर चैनलों को डीटीएच प्लेटफॉर्म के जरिये दिखाया जाएगा। साथ ही अन्य इसे निजी कंपनियों से भी साझेदारी आमंत्रित की जाएगी। दसे एक डोंगल के जरिये इस्तेमाल किया जा सकेगा। जब मोबाइल कंपनियों को लगेगा कि यह प्रचलित हो रहा है तो वे मोबाइलों में इस सेवा को जोड़ सकती है। सिरकर ने कहा कि ऑफिस में काम के दौरान करीब 20–12 घंटे टीवी नहीं देख पाते। इस दौरान ज्यादातर काम टैबलेट और मोबाइल फोन पर होता है। कई लोग रोजाना या करते हैं। वे लोग मोबाइल पर चैनलों का लुत्फउछा सकेंगे। बशर्ते उनकी बैटरी काम करती रहे। उन्हें को ई शुल्क भी नही होगा। इस सेवा को विज्ञापन आधारित बनाया जाएगा।

कैसे होगा उपयोग

इसके लिए दूरदर्शन दूसरी पीढ़ी की डिजिटल वीडियो ब्रॉडकास्ट (डीवीडी–टी2 लाइट) तकनीक का इस्तेमाल करेगा। यह तकनीक फिलहाल डोंगल के तहत इइस्तेमाल में लाई जाती है। इसके तहत टीवी टावर तक सीधे सिग्नल भेजे जाते है। टीवी देखने के लिए किसी मोबाइल इंटरनेट की जरूरत नहीं होती। इसके लिए मोबाइल में एक एप्लेकेशन उदिया जाएगा। यह टीवी सेवा को मोबाइल फोन पर उपलब्ध करा देगा। 44 देशों मे चल रही है सेवाः इस तरह की उसेवा यूरोपीय देशों मे काफी प्रचलित है। इसकी लागत भी बेहद कम आती है। इसी वजह से प्रसार भारती उदस योजना को लागू करना चाहता है। फिलहाल दुनिया के करीब 44 देशों में इस तकनीक के जरिये मोबाइल पर टीवी चैनल उपलब्ध हैं एक आकलन के मुताबिक इस साल के आखिर तक भारत में स्मार्टफोनों की संख्या 22 करोड़ 50 लाख हो जाएगी। यह आकड़ा 18 से 19 करोड़ के बीच रहने की तो पुरी संभावना है, जो कई देशों की आबादी से आधिक है।

आशा खबर

पंजीकरण सदस्यता फार्म

अपने अभिन्न मित्रों, परिचितों, रिश्तेदारों तक अपना सन्देश और भावनाओं को ''आशा खबर'' पत्रिका के माध्यम से उनके घर तक पहुंचायें या उनके जन्म दिन, शादी की वर्षगाठ अन्य खुशी के शुभ अवसर पर पत्रिका की सदस्यता उन्हें उपहार स्वरूप भेट करें।

यह पत्रिका व्यवसाय से राजनीति तक, धर्म से समाज तक, आस्था से पर्यटन तक इसके अलावा राष्ट्रीय व क्षेत्रीय घटनाओं की तह तक जाती है। ''आशा खबर'' समाज की हर घटना की सच्चाई से आपको रूबरू कराती है।

हाँ, मैं आशा खबर पत्रिका का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ।

श्री/श्रीमती .....

जन्मतिथि.....मकान नं.....

पोस्ट.....जिला.....पिन.....

प्रदेश.....मोबाइल नं.....

ई मेल.....

कृपया "Asha Khabar" के नाम रू.....का डी.डी/चेक नं.....

.....Dated.....बैंक का नाम.....प्राप्त करे।

नियम व शर्ते

1. यह योजना भारत में मान्य है। 2. आपका पहला अंक आप तक पहंचने में 4-5 सप्ताह तक का समय लग सकता है। 3. पत्रिका साधारण डाक से ही भेजी जायेगी, गुम हो जाने पर संस्थान की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी, सूचना मिलने पर यदि अंक उपलब्ध है तो पुनः अंक निःशुल्क भेज दिया जायेगां 4. कोरियर/रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने पर कोरियर व डाक का अतिरिक्त खर्च सदस्य को ही वहन करना होगा। 5. सभी विवादों का निस्तारण डलाहाबाद के सक्षम न्यायलय के अधीन होगा।

सम्पादकीय कार्यालय
81/6/2ए, चकदोदी, नैनी
इलाहाबाद - 211008
मो0 - 9415680998-0523-2694058
www.asha khabar.com
e-mail :- editor@ashakhabar.com

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	रूपये 499\
द्वि-वार्षिक	रूपये 999\
त्रि- वार्षिके	रूपये 1499\

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

सुंदरता नारी का प्रथम आभूषण हैं।

सूंदरता नारी का प्रथम आभूषण हैं। सौन्दर्य शब्द के सामने आते ही हमारे मस्तिक में एक सुन्दर कलप्नायक मूर्ति का निमार्ण होता है, सूंदरता स्त्री का प्रथम श्रृगांर है। परन्तु सौन्दर्य के रख-रखाव तथा संरक्षण के लिए षरीर का निरोगी रहना जरूरी होता है। सौन्दर्य के संरक्षण एवं पोशण हेतु कृत्रिम प्रसाधनों का प्रयोग न करके, प्राकृतिक प्रसाधनो को प्रयोग करना चाहिए। आज भी घरेलू सौन्दर्य प्रसाधनों उबटन, फल, सब्जी आदि से निर्मित लेप का इस्तेमाल करके सौन्दर्य आधिक टिकाऊ तथा आकर्शण भी हो सकता है।

सौन्दर्य बढाने में आहार, दिनचर्या, शारीरिक, व्यायाम, योगासन और प्राणायाम का भी महत्वपूर्ण स्थान है। हम अपनी शारीकि सुंद. रता की विशेष देखभाल ब्युटी पार्लर न जाते हुए निम्न उपायों से घर बैठें ही कर सकते हैं। जो सस्ते होने के साथ-साथ प्राकृतिक व पारम्परिक भी है।

नींबू

नींबू एक उत्तम सौनदर्य प्रसाधन है। खट्टे-रसीले नींबू में विटामिन, खनिज-लवण, कार्बोहाइड्रेट तथा फाइबर (रेशे) प्राप्त होते हैं। खूबसूरती के क्षेत्र में नींबू कुदरत का एक नायाब तोहफा है। नींबू में ब्लीचिंग और एस्ट्रिजेंट तत्व होते है। तैलीय और धाग धब्बे से युक्त त्वचा के लिए नींबू उत्तम है।

आटा के चोकर में पानी मिलाकर घोल बना लें और इस घोल में नींबू का रस निचोड़ लें। फिर घोल को सारे शरीर पर मालिश कर लें। इससे त्वचा सुकोमल होगी।

स्नान जल में नींबू का रस निचोड़कर नहाने से त्वचा के रोमछिद्र स्वतः खुल जाते है और त्वचा में नींबू की मधुर सुगन्ध समा जाती है।

नींबू का रस, ग्लिसरीन व गुलाब जल समान मात्रा में मिलकर चेहरे पर लगाने से मुहांसे दूर हो जाते है और रूप निखर जाता है यह नैचुरल ब्लीज का काम करती है।

बालों में चमक लानें के लिए नींबू के छिलकों को पानी में डालकर उबाल लीजिए। सिर धोनें के बाद इस पानी को सिर पर डालें इसमें बालों में अनोखी चमक आ जाएगी।

बालों को शैम्पू से धोने के बाद नींबू का रस लगाएं और बाद में धों ले। यह बालों के लिए कंडीश्नर का कार्य करता है।

जई के आटे में नींबू और दूध मिलाकर पैक बनाएं। यह पैक त्वचा के भीतर तक सफाई करे उसमें एक नयी जान डाल देता हैं।

एक चम्मच नींबू के रस में दो च्मच गुलाब जल मिलाकर कोहनियों पर लगाने से कोह. नियों का रंग निखर जायेगा।

उबली चाय के पानी में नींबू का रस मिला कर चेहने पर लगाएं। इससे तैलीय त्वचा में निखार आता है।

टमाटर

निरोगी काया के लिए जिन-जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, वे सभी तत्व टमाटर के फल के रस में पाए जाते हैं। इसमें लौह तत्व (आयरन) प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। उस के रूप में टमाटर का बाहा प्रयोग तवचा सम्बंधी विकारों के शमन हेतु किया जाता है।

नहाने से पहले टमाटर एवं नीबू का रस मिलाकर शरीर पर लगाएं। जब यह सूख जाए तो नहाते वक्त इस लेप को रगड़-रगड़कर हटा दें। नियमित रूप से कुछ दिनों तक ऐसा करने से त्वचा मुलायम तथा कांतियुक्त हो जाती है।

कमजोरी महसूस होने पर 100 ग्राम गाजर की के रस में 50-50 ग्राम टमाटर और संतरे का रस मिलाकर रोजाना पीने से कमजोरी दूर होती है तथा शारीरिक आकर्षण बढ़ता है।

टमाटर के रस में कुछ बूंदे नींबू के रस की मिलकार चेहरे पर लगाएं फर्क आप तुरन्त महसूस करेंगी।

एक टमाटर का गुदा निकालें और आधा कप नींबू का छिलका लेकर कददुकस करे लें इसमें 5 बूंद नींबू का रस डालें और चेहरे पर लगायें 15 मिनट तक चेहरे पर लगाने से क्रन्तिमय चमक आती हैं।

केला

केला त्वचा को पोषण देता हैं पके केला का प्रयोग फेस पैक के रूप में होता हैं पके केले को मसल कर चेहरे पर पैक लगाने से जहों त्वचा में कसाव पैदा होता है, वहीं आंखों के नीचे काले धब्बे भी दूर होते हैं।

केले व पपीते के गूदे को आई पैड की तरह लगाने से आंखों के नीचे का कालापन दूर होता हैं। पके केले में जैतुन का तेल मिलाकर उपयोगी फेस पैक तैयार करें।

चमकदार और काले वालो के लिए नारियल के तेल में कच्चे केले के टुकड़े काटकर गर्म करें और इस तेल से सिर की मालिश करें रूसी से छुटकारा मिलेगा।

हरी सब्जीयां खाएं कब्ज को दूर भगाएं

फल और सब्जियों में रेशे होते है, जिससे कब्ज का स्थायी रूप से उपचार होता है। इसके साथ ही शरीर को पोषक तत्व भी प्राप्त होता है और शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कभी भी क्षीण नहीं होती। कब्ज के अनेक कारणों में से एक कारण शरीर का दुर्बल होना भी है। फल-सब्जियां ऐसे रोगियों को बल प्रदान करते हैं और कब्ज बनने पर अंकुश लगाते है।

मेथी की पत्तियों की सब्जी पेट के लिए बहुत लाभप्रद है। पाचन क्रिया क्षीण होने, भूख न लगने की शिकायत होने पर सुबह-शाम मेथी की पत्तियों की सब्जी बनाकर खाने से पाचन क्रिया तेज होने के साथ कब्ज की समस्या का भी मुलायम होकर गुदा मार्ग से आसानी से निकल आता है। मेथी की पत्तियों का कच्चा रस पीने या सब्जी बनाकर खाने से वायु विकार और पित्त विकार का भी शमन होता है।

चौराई के पत्तों की सब्जी शीत, कब्ज को नष्ट करने वाली, रक्त विकारों को नष्ट करने वाली और खाने से पाचन शक्ति प्रबल होती है। भूख बढ़ती है। चौलाई के क्षार तत्व और रेशे आंतों में बहुत दिनों से जमा, कठोर हुए मल को मुलायम कर गुदा के रास्ते बाहर निकाल देते हैं। चौलाई का कच्चा रस 150 ग्राम प्रातःकाल पीने से उदर रोग शांत होकर पाचन शक्ति बढ़ती है। मधुर और शीतवीर्य होने के कारण चौलाई का रस प्रतिदिन सुबह पीने से आंतों में सूखा हुआ मल आसानी से बाहर निकल आता है और व्यक्ति को कभी कब्ज की समस्या होती ही नहीं है।

गाजर कब्ज को बहुत शीघ्रता से नष्ट करती है। दिन के भोजन में दो गाजर खाएं और सुबह खाली पेट गाजर का रस आधा गिलास प्रतिदिन पिएं। इससे कब्ज नहीं बनता। रक्त की उत्तेजना, आंतों की गैस और दुर्गंध दूर हो जाती है। पेट में से बदबूदार वायु निकलने की शिकायत गाजर का रस पीते रहने से दूर हो जाती है तथा आंते और मलाशय साफ रहते हैं। पेट फूल जाना, आदि रोग दूर हो जाते हैं।

कच्चे पालक का सूप 150 ग्राम मात्रा में कुछ रोज तक पीने से कब्ज दूर होता है। पालक को लोहे और तांबे की खान कहा जाता है और इसके सेवन से सभी विटामिन बी–कांप्लेक्स की पूर्ति हो जाती है। पालक का गाढा सूप प्रतिदिन पीने से भी कब्ज नष्ट होकर सुबह शौच खुलर आता है।

पके आम के 200ग्राम रस में इतना ही जल मिलाकर चीनी और नीबू का रस डालकर शर्बत बनाएं। पहले चीनी का शर्बत बना लें, फिर आम का रस मिलाकर अल्प मात्रा में बर्फ डालकर पिएं। आम का यह शर्बत बहुत स्वादिष्ट होने के साथ ही कब्ज को भी नष्ट करता है।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

जहाँ आत्मा वहीं परमात्मा

जब कभी आकाश के वातावरण में असुरता की मात्रा बढ़ जाये तो उसका उपचार यज्ञ प्रयोजनो से बढ़कर और कुछ हो नही सकता। लंका युद्ध के बाद राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। महाभारत के पश्चात कृष्ण ने भी पांडवो से एक महायज्ञ कराया था। उनका उद्वेश्य महायुद्धों के कारण जनसाधारण में स्वार्थपरता की मात्रा अधिक बढ जाने से वातावरण मे वैसा ही विक्षोभ फिर उत्पन्न हो जाना । आज की विभिन्न समस्याओं के लिए यज्ञीय प्रक्रिया को पुनर्जीवित करना आज के स्थिति में और भी अधिक आवश्यक हो गया है।

यज्ञ की उष्मा मनुष्य के अंतः करण पर देवत्व की छाप डालती है। जहां यज्ञ होतें है, वह भूमि एवं प्रदेश सुसंस्कारो की छाप अपने अंदर धारण कर लेता है। और वहां जाने वालो पर दीर्घकाल तक प्रभाव डालता रहता है। प्राचीनकाल में तीर्थ वही बने है, जहां बड़े-बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरो में, जिन स्थानो में यज्ञ होते है, वह भी एक प्रकार का तीर्थ बन जाता है और वहां जिनका आगमन रहता है, उनकी मनोभूमि उच्च, सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनती है। महिलाएं, छोटे बालक एवं गर्भस्थ शिशु विशेष रुप से यज्ञ शक्ति से अनुप्राणित होते है। उन्हें समीपता बड़ी उपयोगी सिद्ध होती है।

प्रकृति का स्वभाव यज्ञ परंपरा के अनुरुप है। समुद्र बादलो को उदारातापूर्वक जल देता है, बादल एक स्थान से दूसरे तक उसे ढोकर ले जाने और बरसाने का श्रम वहन करते है। नदी, नाले प्रवाहित होकर भूमि को सींचते और प्राणियों की प्यास बुझाते है। वृक्ष एवं वनस्पतियॉ अपने अस्तित्व का लाभ दूसरो को ही देते है। पुष्प और फल दूसरे के लिए ही जीते है सूर्य चंद्र, नक्षत्र, वायु आदि की क्रियाशीलता उनके अपने लाभ के लिए नही, वरन दूसरे के लिए ही है। शरीर का प्रत्येक अवयव अपने निज के लिए नही, वरन समस्त शरीर के लाभ के लिए ही अनवरत गति से कार्यरत रहता है। इस प्रकार जिधर भी दृष्टिगत किया जाए, यही प्रकट होता है कि इस संसार में जो कुछ स्थिर व्यवस्था है, वह यज्ञ वृत्ति पर ही अवलम्बित है। यदि इसे हटा दिया जाए तो सारी सुन्दरता, कुरुपता में और सारी प्रगति,विनाश में परिणित हो जायेगी। ऋषियो ने कहा है- यज्ञ ही इस संसार चक्र की धुरी है। धुरी टूट जाने पर गाड़ी का आगें बढ़ सकना कटिन है।

यज्ञ का तात्पर्य है- त्याग, बलिदान, शुभ कर्म। अपने प्रिय खाघ पदार्थों एवं मूल्यावन सुगंधित पौष्टिक द्रव्यों को अग्नि एवं वायु के माध्यम से समस्त संसार के कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा वितरित किया जाता है। वायु शोधन से सबको आरोग्यवर्धक सांस लेने का अवसर मिलता है। हवन हुए पदार्थ वायुभूत होकर प्राणिमात्र को प्राप्त होते है और उनके स्वास्थ्यवर्धन, रोग निवारण में सहायक होते है। यज्ञ काल में उच्चरित वेद मंत्रों की पुनीत शब्द ध्वनि आकाश में व्याप्त होकर लोगों के अंतःकरण को सात्विक एवं शुद्ध बनाती है। इस प्रकार थोडे ही खर्च से यज्ञकर्ताओं द्वारा संसार की बडी सेवा बन पाती है। यज्ञ, योग की विधि है जो परमात्मा द्वारा ही हृदय में सम्पन्न होती है। जीव के अपने सत्य परिचय जो परमात्मा का अभिन्न ज्ञान और अनुभव है, यज्ञ की पूर्णता है। यह शुद्ध लेने की क्रिया है।

इसका सबंध अग्नि से प्रतीक रुप में किया जाता है। यज्ञ का अर्थ जबकि योग है किन्तु इसकी शिक्षा व्यवस्था में अग्नि और घी के प्रतीकात्मक प्रयोग में पारंपरिक रुचि का कारण अग्नि के भोजन बनाने में, या आयुर्वेद और औषधीय विज्ञान द्वारा वायु शोधन इस अग्नि से होने वाले धुओं के गुण को यज्ञ समझ इस 'यज्ञ' शब्द के प्रचार प्रसार में बहुत सहायक रहे। विधिवत किये गये यज्ञ इतने प्रभावशाली होते है, जिसके द्वारा मानसिक दोषो-दुर्गुणों का निष्कासन एवं सदभावो का अभिवर्धन नितान्त संभव है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष कायरता, कामुकता, आलस्य, आवेश, संशय आदि मानसिक उद्वेगो की चिकित्सा के लिए यज्ञ एक विश्वस्त पद्धति है। शरीर के असाघ्य रोगो तक का निवारण उससे हो सकता है।अनेक प्रयोजनों लिए-अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए, अनेक विधानों के साथ, अनेक विशिष्ट यज्ञ भी किये जा सकते है। दशरथ ने पुत्रोष्टि यज्ञ करके चार उत्कृष्ट सन्ताने प्राप्त की थी, अग्निपुराण में तथा उपनिषदो में वर्णित पंचाग्नि विद्या में ये रहस्य बहुत विस्तारपूर्वक बताते गये है। विश्वामित्र आदि ऋषि प्राचीनकाल मे असुरता निवारण के लिए बड़े-बड़े यज्ञ करते थे। राम- लक्ष्मण को ऐसे ही एक यज्ञ की रक्षा के लिए स्वयं जाना पड़ा था। लंका युद्ध के बाद राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे । (महाभारत के पश्चात कृष्ण ने भी पांडवो से एक महायज्ञ कराया था, उनका उदेश्य युद्धजन्य विक्षोभ से क्षुब्द वातावरण की असुरता का समाधान करना ही था) जबकि कभी आकाश के वातावरण में असुरता की मात्रा बढ़ जाए, तो उसका उपचार यह यज्ञ प्रयोजनों से बढ़कर और कुछ हो नही सकता ।

आज पिछले दो महायुद्धो के कारण जनसाधारण में स्वार्थपरता की मात्रा अधिक बढ़ जाने से वातावरण में वैसा ही विक्षोभ फिर उत्पन्न हो गया है। उसके समाधान के लिए यज्ञीय प्रक्रिया को पुनर्जीवित आवश्यक हो गया है।

लड़ाई लंबी है, बाल श्रम खत्म करके रहूंगा

करीब तीन दशक से बाल अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता और गैर सरकारी संगठन 'बचपन बचाओ आंदोलन' के प्रमुख कैलाश सत्यार्थी को शांति का नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। सत्यार्थी ने इस सम्मान को ऐसे बच्चों का समर्तित किया है, जो बाल श्रम के शिकार है। कैलाश सत्यार्थी से संवाददाता अमरीश श्रीवास्तवने बातचीत की।

कैलाश सत्यार्थी

जन्म 11 जनवरी,1954 विदिशा, मध्य प्रदेश

दिल्ली के कालकाजी इलाके में पत्नी, बेटी,बेटा व बहू के साथ रहते है।

भोपाल गैस त्रासदी के राहत अभियान में भी किया काम।

बाल मजदूरी को खत्म करने के लिए मजबूत कानूम बनाने की जोरदार मांग की।

1998 में 103 देशो से गुजरने वाली बाल श्रम विरोधी विश्व यात्रा का नेतृत्व संभाला

पुरस्कार

2009 अमेरिका में डेफेडर ऑफ डेमोक्रेसी अवॉर्ड
2008 स्पेन में आलफासों कोमिन इंटरनेशनल अवॉर्ड
2007 में मेडल ऑफ द इटालियन सेनाटे से नवाजे गए
2006 अमेरिका में फ्रीडम अवॉर्ड
2002 में वेलेनबर्ग मेंडल, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन
1999 जार्मनी में फ्रइड्रीच इबर्ट स्टीफटंग अवॉर्ड
1995 अमेरिका में राबर्ट एफ केनेडी ह्यामन राइट अवॉर्ड
1985 अमेरिका में द ट्रमपेटेर अवॉर्ड
1984 जर्मनी में द आचेनेर इंटरनेशनल पीस अवॉर्ड

खोल दिया था शेर का पिंजरा

घटना 15 जून 2004 की है। उम्र के गोंडा जिले के कर्नलगंज कस्बें में सर्कस लगा था। इसमें काम करने वाली बाल श्रम किशोरियों को कुक्त कराने के लिए कैसाश सत्यार्थी ने मोर्चा खोल दिया । इसका विरोध करने वाले सर्कस के प्रबधंक व मालिक ने सत्यार्थी के अंदर आते ही शेर का पिंजरा खोल दिया। आरोपियों ने उसकी पिटाई की और कनपटी पर तमंचा तान दिया था। हमले की गूंज पूरे देश में सुनी गई, लेकिन कैलाश का जूनून रंग लाया और जान की बाजी लगा कर 11 किशोरियों को मुक्त करा लिया। उन्होने कर्नलगंज कोतवाली में यौन उत्पीड़न, बधुओं मजदूर निषेध अधिनियम समेत 16 मुकदमें भी दर्ज कराए थे। कर्नलगंज में चल रहें एक सर्कस में बाल श्रमिक किशोरियों के शोषण की सूचना गैर, सरकारी संगटन बचपन बचाओं आंदोलन के प्रमुख कैसाश सत्यार्थी तक पहुची। अगले ही दिन वह दिल्ली से कर्नलगंज पहुच गए। इसकी भनक सर्कस संचालको को भी लग गई। कैलाश सत्यार्थी जब किशोरियों से जानकारी हासिल कर रहे थे, तभी उन पर हमला बोल दिया गया। लोग बताते है कि उन्हें लोहें की सरियों व डंडो से दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया था। प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो उनकी कनपटी पर तंमचा तान दिया और उन पर शेर छोड़ने के लिए पिंजरा खोल दिया । प्रशासन के एक अधिकारी ने पिंजरे को बंद कराया था। हमले में सत्यार्थी और उनके सहयोगी काफी जख्मी हो गए और उनका इलाज गोंडा में कराया गया था। इसके बाद कर्नलगंज कोतवाली में बंधुआ मजदूर निषेध अधिनियम समेंत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। इस दौरान बाल श्रम करने वाली नेपाल, दार्जिलिंग व अन्य स्थानो से भगाकर लाई गई 11किशोरियों को भी मुक्त कराया गया था। किशोरियो के बयान पर दुष्कर्म का भी मामला दर्ज किया गया था।

विदिशा से निकलकर विश्वपटल पर छाए

शांति का नोबेल पुरस्कार हासिल करने वाले कैलाश सत्यार्थी मध्य प्रदेश के विदिशा में बचपन के दिनों में लाइब्रेरी किताबे लाते थे और लैप पोस्ट के नीचे बैटकर पढत्ते थे। उनका बचपन शहर के किलेअंदर की तंग गलियो में बीता। उन्होनें प्राइमरी से लेकर इंजीनियरिंग तक की शिक्षा यही से हासिल की। उनके पिता हेड कांस्टेबल थे। नोबेल पुरस्कार की घोषणा होने के बाद अमूमन शांत रहने वाली किलेअंदर स्थित तंग गली में चहल-कदमी बढ रहे थे। घर के बाहर पटाखे चलाए जा रहे थे।

भिखारी बच्चों को खिलाते थे खाना

कैलाश सत्यार्थी की भाभी रतीदेवी शर्मा ने बताया कि घर पर भी मांगने आने वाले बच्चों को कैलाश खाना खिलाते थे। उन्हें लिखने-पढने के लिए कॉपी किताबें दिया करते थे। एक बार उन्होने सत्यार्थी को सजा के तौर पर धूप में खड़ा कर दिया। बहुत देर तक धूप में खड़े रहें जिससे उनके पैर में फफोले पड़ गए थे।

पूरी पढ़ाई विदिशा से की

कैलाश सत्यार्थी किलेअंदर के वीर हकीकत मार्ग पर जिस घर में रहा करते थे, उनके परिजन आज भी उसी घर में रहते है। उनके बड़े भाई डॉ0 जगमोहन शर्मा ने बताया कि कैलाश ने प्रारभिंक शिक्षा शहर के पेढीं स्कूल और तोपपुरा स्कूल में ग्रहण की है। इसके बाद उन्होंने एसएसएल जैन स्कूल से बीई इलेक्ट्रिकल ब्रांच से इंजीनियरिंग की । इसके बाद इसी कॉलेज प्रबंधन से विवाद के बाद नौकरी छोडकर दिल्ली चले गए। बाद में वह जीते कॉलेज प्रंबधन ने उन्हें बुलाया पर सत्यार्थी जब तब अपनी अलग राह बना चुके थे।

चार भाईयों में सबसे छोटे

कैलाश सत्यार्थी चार भाईयो मे सबसे छोटे थे। उनकी पत्नी सुमंधा कैलाश, उनके अधिवक्ता पुत्र भुवन रिभु और पुत्रवधु प्रियंका बाल दासता के खिलाफ उनके संघर्ष के साथी है। उनकी पुत्री अस्मिता एक अमेरिकी विश्वविघालय में अध्ययन पूरा करने के बाद वांशिगटन स्थित विश्व की जानी-मानी संस्था इंटरनेशनल सेंटर फॉर मिशन एंड एसप्लाइटेड चिल्ड्रेन में एक वर्ष तक फेलो रही है।

कई पदयात्राएं की

बाल मजदूरी की समाप्ति के लिए लोक जागरण और जन आंदोलन के साथ ही मजबूत कानूनो व सरकारी योजनाओं की मांगो को लेकर कैलाश सत्यार्थी के नेतृत्व मे अनेको यात्राएं की गई।

चाचा नेहरू की याद

भारत के पहले पधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद में हुआ था।

वे छह बार कांग्रेस अध्यक्ष के पद (लाहोर 1929,लखनऊ 1936, फैजपुर 1937, दिल्ली 1951, हैदराबाद 1953, और कल्याणी 1954) पर रहे।

लंदन मे हैरो और कैम्ब्रिज में पढ़ाई के दौरान एक भारतीय टयूटर भी रखा हुआ था, जो उन्हें हिंदी और संस्कृत पढ़ाया था।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में नेहरूजी 9 अगस्त, 1972 को बंबई (अब मुंबई) मे गिरफ्तार हुए और अहमदनगर जेल में रहे।, जहां से 15 जून, 1945 को रिहा किए गए।

आजादी के पहले गठित अंतरिम सरकार में और आजादी के बाद 1947 में भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। वे निधन तक (27 मई, 1964) इस पद पर बने रहे।

पंडित नेहरू शुरू से हही गांधीजी से पभावित रहें और 1912 में कांग्रेस से जुड़े। गांधी जी से उनकी मुलाकात 1946 में पार्टी की वर्षिक बैठक में हुई। गांधीजी पंडित नेहरू से लगभग 20 साल बड़े थें।

जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखी गई प्रमुख पुस्तके द डिस्कवरी ऑफ इंडिया, लेटर्स फ्रॉम ए फादर टु हिज डॉटर, ग्लिम्पसेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, एन आटोबायोग्राफी दुवर्ड्स फीडम।

खिलने दे बचपन

दोस्तो,बचपन की शरारते कभी नही भूलती, पर बचपन की सीख भी ताउम्र याद रहती है। आज चाचा नेहरु की 125वीं जयंती के मौके पर आइए मिलते है कुछ सेलिब्रिटी किशोरों से जो बचपन की यादों को ताजा करते हुए दे रहें है कुछ खास संदेश......

वह जितना रिस्पांसिबल है, उतना ही बेफिक्र भी । घर पर मां को खूब तंग करता है, टीवी देखने की अपनी आदत से परेशान कर देता है लेकिन मां जब घर पर मौजूद न हो, तो वह न केवल अपना होमवर्क समय पर कर लेता है, बल्कि अपनी छोटी बहन का भी खूब ख्याल रखता है। दोस्तो, बात हो रही है डिज्नी चैनल पर आयोजित कहानी मास्टर प्रतियोगिता के विनर आत्रे गर्ग की। आत्रे कहता है,बच्चों को मस्ती का पूरा मौका मिलना चाहिए और बड़ो को उन्हें लिमिट क्रॉस करते समय रोकना भी चाहिए। दरअसल,बचपन जितना बेफिक्र होता है, उतना ही महत्वपूर्ण भी, क्योंकि बचपन में हम जो कुछ सीखते है वही हमें एक जिम्मेंदार नागरिक होने में हमारी मदद कर सकते है। बाल-दिवस का अर्थ न केवल बचपन की अहमियत के बारे में सबको जागरुक करना भी है।

छोटी कोशिश, बड़ा प्रभाव

मै अपने बचपन को खूब एंजॉय कर रहा हूँ। डिज्नी चैनल पर मै अपने प्रोग्राम में तकरीबन सभी बड़े अभिनेताओं का इंटरव्यू कर चुका हूँ। ये सब देखकर लोग मुझे खूब तेज-तरार और गंभीर समझते होगें पर सच तो यह है कि मै अव्वल दर्जे का शैतान हू। घर में अपनी छोटी बहन को खूब तंग करता हूं। बाल दिवस बच्चों का दिन है पर बड़ो को भी इस खास दिन को सेलिब्रिट करना चाहिए। छोटे -बड़े सबको मिलकर उन बच्चों के लिए कुछ करना चाहिए जो वंचितहैं लेकिन जो सपने देखते है और उन सपनों के साथ आगें बढ़ना चाहते है। आखिर हमारी एक छोटी पहल या कोशिश से ही बड़े बदलाव आ सकते है।

बोझ न डाले बचपन पर

मैने अपना बचपन खूब एंजॉय किया है। आज भी जब मन करता है खूब बचपन करती हूँ। हमेशा समझदार बनी रही हूँ जरुरी नही है। अब कालेजमें आ गई तो समझ मे आता है कि बचपन के दिन कितने कीमती होती है। पर यह देखकर बहुत दुख होता है कि कुछ बच्चो को बचपन यू ही बीत जाता है। मै उनकी बात कर रही जो गरीब है, बल्कि यह बात उन बच्चो पर भी लागू होती है जो घर या दोस्तो की वजह से नही, बल्कि अपने आसपास के प्रभाव से इतने प्रेशर में होते है कि अपना बचपन खो देते है। बस पढ़ाई के अलावा कुछ सुझता ही नही है उन्हें बहुत छुटापन से ही करियर में अच्छा करने का सामाजिक दबाव बचपन को बोझिल कर रहा है। बाल दिवस पर इस बाबत कुछ सोचने और पहल करने की जरुरत है।

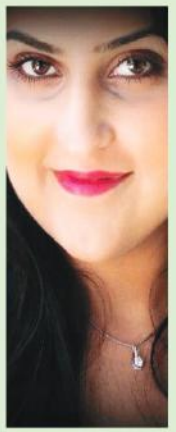

संकल्प दिवस है यह.....

गरीबी की मार से मजदूरी करते बच्चों को देखकर बहुत अफसोस होता है मुझे बाल दिवस पर पूरा देश जश्न मनाएगा, पर बाल मजदूरी करने वाले बच्चो के लिए आज का दिन भी और दिनों की तरह सामान्य होगा। जीवन में आगें क्या करना है? इस सवाल से उन्हें कोई मतलब नही उनके लिए तो दिन की शुरुआत ही इस चिंता से होती है कि आज उनका परिवार खाएगा क्या य उनका पेट कैसे भरेगा? हमें बाल दिवस पर इस गंभीर मसले पर सोचने की जरुरत है, जिसकी वजह से आज भी न जाने कितने बच्चे अपना बचपन दांव पर लगा रहें है और बहुत छोटी उम्र में ही बड़े होने को मजबूर हो जाते है। बाल दिवस को संकल्प दिवस के तौर पर मनाया जाए,ताकि रोते हुए बचपन के चेहरे पर मुस्कान बिखेरी जा सके।

देश बने स्वच्छता की मिसाल

दोस्तो इस साल चाचा नेहरु के 125वें जन्म दिन पर बाल स्वच्छता मिशनकी शुरुआत हो रही है। इसका अर्थ है हम न केवल बच्चों के प्रिय चाचा नेहरु के जन्मदिन को सेलिब्रिट करें, बल्कि इस दिन स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति सचेत और संवेदनशील होने का संकल्प भी ले।

मुरझा न जाएं ये फूल

10 साल की उम्र से सिगिंग में हूँ। कई बड़े प्लेटफार्म करने का अवसर मिला हैइस वजह से लोग मुझें जानते है बड़े ऑफर्स भी मिल जाते है। लेकिन मै अभी अपनी पढ़ाई पर फोकस कर रही हूँ। बचपन लाइफ का सुनहरा दौर है, जो दोबारा नही लौट सकता,इसलिए मैं अपने बचपन को एंजाय कर रही हू। बाल दिवस को मै अपने पापा के साथ सेलिब्रिट करना चाहती हूँ। आप सोच रहे होगें इसमें नई बात क्या है दरअसल पापा मेरे सबसे अजीज है। वे यह समझते है कि बचपन को जीना कितना जरुरी है। यही वजह है कि ये मुझ पर उम्मीदों का ज्यादा बोझ नही डालते। शायद वे जानते है कि ज्यादा दबाव पड़ने से बचपन रुपी फूल मुरझा जाते है।

नेहरु की जयंती मनाएगी मोदी सरकार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहार लाल नेहरु की 125वीं जयंती मनाने के लिए राष्ट्रीय कमेटी का पुनर्गठन कर दिया है। मोदी खुद इस कमेटी के अध्यक्ष है। साथ ही उन्होंने इस योजना को लागू करने के लिए अलग से एक क्रियान्वयन कमेटी का गठन कर दिया है। गृह मंत्री राजनाथ सिंह इस कमेटी के अध्यक्ष बनाए गए है। राष्ट्रीय कमेटी की पहली बैठक दिवाली के बाद होगी। सरदार बल्लभ भाई पटेल और महात्मा गांधी के बाद अब गांधी परिवार की सबसे कददावर शख्सियत जवाहर लाल नेहरु को अपनाने की मंशा जाहिर कर मोदी सरकार ने कांग्रेस का मुंह बंद कर दिया है। नेहरु की 125वीं जयंती बनाने के लिए राष्ट्रीय कमेटी का गठन यूपीए के दौरान ही हुआ था। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह इसके अध्यक्ष थे। अब मोदी ने इसे सिर्फ पुर्नगठित ही नही किया है, बल्कि क्रियान्वयन कमेटी बना कर नेहरु को सिर्फ कांग्रेस की विरासत से बाहर निकालने की अपनी मंशा साफ की दी है। गौरतलब है कि मोदी ने गांधी जयंती पर शुरु हुए स्वच्छता अभियान के मौके पर यह ऐलान भी किया था कि वह नेहरु के जन्मदिन 14 नवंबर से इंदिरा गांधी के जन्मदिन 19 नवंबर तक स्कूलों में स्वच्छता अभियान चलाएगें।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

जंगल है तो जीवन है

वनों से हमारा अनुराग किसी से छिपा नही है। इंसानी सभ्यता की शुरुआत से ही जंगल हमें आसरा देते आ रहें है। अनेकों तरीकें से इंसान को लाभ पहुंचाने वाले वन जीव-जंतुओं की शरणस्थली भी होते है। इधर-बीच विकास की सुपरफास्ट रफ्तार पकड़ने के क्रम में हम सबने जंगलो को काटना शुरु किया है। लिहाजा हमारे ऊपर कई तरीके के प्रतिकूल असर पड़ने शुरु हो गए है। साथ ही धरती के आभूषण कहें जाने वाले वन्यजीवों के अस्तित्व पर मंडराता खतरा और गहराता जा रहा है। सबसे बुद्धिजीवी जीव होने के चलते इंसान इस खतरे से अपने अस्तित्व की कोई न कोई काट निकाल सकता है, लेकिन ये बेजुबान वन्यजीव खत्म होते अपने आवासों की व्यथा किससे कहें । ऐसे में वन्यजीव सप्ताह के अवसर पर देश दुनिया के जीवों पर छाए इस संकट पर एक नई पेशकश ।

देश में जंगल

करीब सात लाख वर्ग जंगल क्षेत्र के साथ भारत मामले मं दुनिया का दसवां सबसे बड़ा देश है। हालांकि पिछले कुछ साल से यहां के जंगलो की सेहत मे सुधार आया है। लेकिन बहुत पहले की तुलना में इनका क्षेत्र काफी कम हो चला है। इंसानी आबादी बढ़ने के साथ जरुरतें पूरी करने के नाम पर जिस तरह से वनों को निशाना बनाया जा रहा है उससे जंगली जानवरों के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो गया है।

कुल क्षेत्र फल (वर्ग किमी मे)

प्रकार	क्षेत्रफल	भौगोलिक क्षेत्रफल में हिस्से दारी (प्रतिशत में)
अति घने जंगल	83.502	2.54
औसत घने जंगल	3,18,745	9.70
खुले जंगल	2,95,651	8.99
कुल जंगल क्षेत्र	6,97,898	21.23
पेड़ से ढका क्षेत्र	91,266	2.78
कुल	7,89,164	24.01
झाड़ियां	41,383	1.26
गैर जंगल क्षेत्र	25,47,982	77.51
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	32,87,263	100.00

प्रजातियों पर खतरा

इंटरनेशनल यूनियन फार कंजरवेशन ऑफ नेचर (आइयूसीएन) के अनुसार दुनिया की हर आठ पक्षी प्रजातियों मे से एक पर विलुप्ति का खतरा है। इसी तरह ही चार स्तनधारी में से एक, ही सात समुद्री कछुए में से छह और हर तीन उभयचर में से एक प्रजाति के अस्तित्व पर तलवार लटक रही है। यही नही ही चार कोनिफर्स पेड़ों में से एक विलुप्तप्राय है।

- कृषि फसलों की 75 फीसद जेनेटिक विविधता खत्म हो चुकी है।
- विश्व की 75 फीसद मछली प्रजातियो का अत्याधिक शिकार हो रहा है।
- वैश्विक तापमान में इजाफ पर अस्तित्व के खतरे से जूझ रहे जीवो की प्रजातियों में इजाफा हो सकता है।

जैव विविधता

जीवों की प्रजातियों की संख्या के लिहाज से भारत बहुत समृद्ध रहा है, लेकिन जिस गति से वन्यजीवों के साथ अन्याय किया जा रहा है इससे प्रकट होता कि यह तमगा ज्यादा दिन देश के साथ रहने वाला नही है। देश में 45 हजार के आसपास पादप प्रजातियां और 91 हजार के करीब प्राणियो कीक प्रजातियां है। अब तक ज्ञात कुल वन्यजीव प्रजातियों में से 6.5 भारत में पाई जाती है।

मछली - 2500 प्रजाति,
उभयचर - 150ए सरीसृप - 450
पक्षी - 1200 , स्तनधारी - 850
कीट व पतंगे - 68 हजार प्रजाति

मंडराता खतरा

भारत की कम से कम 10 फीसद पादप प्रजातियों और इससे कीह अधिक वन्यजीवों की प्रजातियो पर खतरे की तलवार लटक रही है। ये लुप्तप्राय है। अभी भी वह दिन आ सकता है जब हमारी पीढ़ियां उन्हें केवल तस्वीरों में ही देख पायेगीं। इनमें से स्तनधारी जीवों की 80 प्रजातियां, पक्षियों की 47, सरीसृप वर्ग की 15, जल और स्थल दोनो पर रहने वाले जीवों की 3 और बड़ी संख्या में कीट, तितली और भोरो की प्रजातिया खतरें में है। प्राइमेट्स की 19 प्रजातियों में से 12 खतरे मे है।

खत्म हुआ अस्तित्व

वन्यजीव विशेषज्ञों का मानना है कि कई प्रजातियों का अस्तित्व बिना हमें पता चले ही खत्म हो चुका है। लेकिन चीता और गुलाबी सिर वाली बत्तख जैसी प्रजाति हमारे देखत-देखते गायब हो गई।

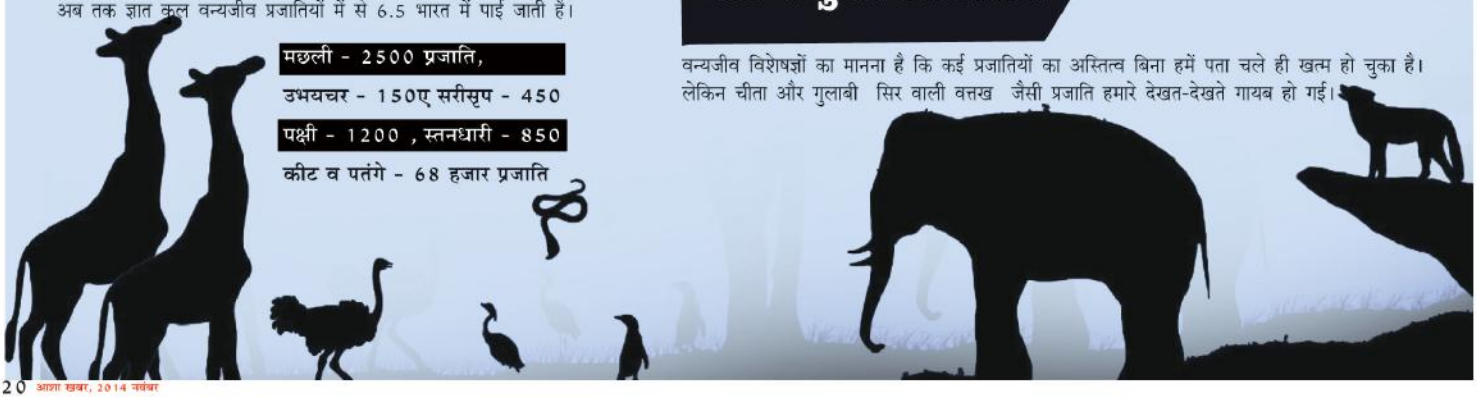

शुरु हो गई ऑनलाइन पटाखों की बिक्री

ऑनलाइन शॉपिंग के इस दौर में त्योंहार मनाना पहले से ज्यादा आसान हो गया है, मिठाई, गैजेट्स ड्रायफ्रूट्स तक तो ठीक था लेकिन अब दिवाली पर पटाखो की बिक्री भी ऑनलाइन शुरु हो गई है, शहर के भी कई व्यापारी ऑनलाइन पटाखों के व्यवसाय में लिप्त है, ग्राहकों की नजर में यह सिस्टम सुविधाजनक भी है, क्योंकि पटाखोंकी दुकान पर लाइन नही लगानी पड़ती, डिस्कांउट के लिए गिड़गिड़ाना नही पड़ता, घर बैठे उन्हें थोक रेट में पटाखें उपलब्ध हो जाते है, बावजूद इसके ऑनलाइन पटाखें की यह बिक्री परेशानी का सबब बन सकती है, प्रशासन की अनदेखी के चलते इस सुविधाका कभी-भी मिसयूज हो सकता है। तकरीबन एक साल पहले की घटना अभी भी लोगो के जेहन में ताजा है।

ऑनलाइन बिक्री में मची धूम

इंटरनेट पर ऐसी दर्जनों वेबसाइट है जो इस समय ऑनलाइन पटाखे बेचने का विज्ञापन दे रही है इनमें दिए गए कांटेक्ट नंबर पर कॉल करके आप अपनी डिमांड जाहिर कर सकते है ये कंपनिया फटाफट पटाखे डिलीवर करने का दावा कर रही है, ऑनलाइन पटाखों के रेट और पैकेज भी दिए गए है वैरायटी इतनी है कि आप पटाखों के नाम उनकी विशेषता के आधार पर उन्हें बुक करा सकते है इनकी डिलीवरी 24 से 48 घंटो में किए जाने का दावा किया जा रहा है कैश भी ऑन डिलीवर ही देना होगा।

दरअसल ऑनलाइन पटाखों की बिक्री चेन बाई चेन की जा रही है वेबसाइटो पर दिए एक नंबर पर कॉल किया तो व्यापारी ने बताया कि आप बस ऑर्डर दीजिए, जल्द से जल्द पटाखे आप तक पहुचा दिए जायेगें पैसे आप पार्सल लेनेके बाद दीजिएगा, ऐसे मेंसवाल यह उठता है कि शहर में ऐसे पटाखों काक भंडारण कहां किया जा रहा है क्या यह जिला प्रशासन की अनुमति से हो रहा है, अगर लाइसेंस दिया जारहा तो उसकी प्रासेस क्या है? ऐसे कई सवाल ऑनलाइन पटाखों की बिक्री को लेकर उठ रहे है दूसरे शहरों से पार्सल आ रहे है तो इनको लाने में किस प्रकार की सुरक्षा बरती जा रही है। आपके घर अगर कोई पार्सल आता है तो उसमें रखी चीज का पता उसे खोलने के बाद ही होता है जिस तरह से ऑनलाइन पटाखों की बिक्री का व्यवसाय चल रहा है उसमें तो सिक्योरिटी का कही जिक्र ही नही है अगर यह पार्सल ट्रेनों से भी लाए जा रहे है तो इनके फटने से कई यात्री को जान-मान का नुकसान हो सकता है बता दे कि शहर में दीवाली पर पटाखें बेचने के लिए प्रशासन अस्थाई तौर पर दुकानों को लाइसेंस जारी करता है उनको रहवासी इलाको से दूर खाली मैदान पर पटाखे बेचने की परमिशन दी जाती है ऐसे मे ऑनलाइन पटाखो की बिक्री और उनकी डिलीवरी को नजरअंदाज किया जा रहा है।

तैयार है मार्केट में चाइनीज पटाखे

इस बार सेंट्रल गवर्नमेंट द्वारा चाइनीज पटाखो की बिक्री पर रोक लगाले के बावजूद इनकी एक बड़ी खेप शहर में बिकने के लिए आ चुकी है, बाजार सूत्रों की माने तो कुछ महीनें पहले ही व्यापारियों ने करोड़ो रुपए के चाइनीज पटाखे खरीद लिए थे और दिवाली पर इन्हें चोरी छिपे बेचने की कवायद चल रही है सरकार ने चाइनीज पटाखों में पोटैशियम क्लोरेट जैसे हानिकारक केमिकल के मिलाए जाने की पुष्टि होने के बाद इनकी बिक्री पर रोक लगाई थी यह बड़ा नुकसान पहुंचा सकता है।ऑनलाइन खरीद पर विभिन्न वेबसाइट होलसेल रेट पर उपलब्ध करा रही है, जिनके रेट 12 रुपये से लेकर पांच हजार रुपये है हजारों रुपये में उपलब्ध पैकेज में सभी तरह के पटाखें शामिल है, वेबसाइटो पर महगें पटाखें बुक कराने पर डिस्काउंट भी दिया जा रहा है, पांच हजार रुपये की खरीद पर पांच परसेंट, दस हजार पर 10 परसेंट इनकी और 20 हजार रुपये से उपर की खरीद पर 20 परसेंट तक की छूट दी जा रही है कस्टमर इनकी रेट लिस्ट अपनी ईमेल आईडी पर भी मंगा सकते है इनमें स्पार्कल्स, प्लावर, पाट्स चक्कर्स, एटम बंब सिंगल शॉट, मेंगा जपर्स आइटम्स के डिफरेंट रेट कार्ड दिए गए हैं।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

बंगाल धमाके के तार अलकायदा से जुड़े

पश्चिम बंगाल के वर्द्धमान जिले में स्थित खातरागढ़ के एक घर में दो अक्टूबर को हुए विस्फोट के तार अलकायदा से जुड़ने के संकेत मिले हैं। मामले की जांच कर रही सुरक्षा एजेंसियों को धमाके में शामिल लोगों के संबध अलकायदा सिमी व इंडियन मुजाहिद्धीन से होने की जानकारी प्राप्त हुई है। एजेंसियों का कहना है कि बंगाल आंतक के इस गंभीर मसले पर भी चुप्पी साधे हुए है। पुलिस ने धमाके के बाद घर से प्राप्त हुए विस्फोटको को नष्ट कर दिया। जबकि इसे जांच के लिए सुरक्षित रखा जाना चाहिए। इतना ही नही मामले की सूचना भी केंद्रीय एजेंसियों को देरी से मिली। केंद्रीय ग्रह मंत्रालय के एक वरिष्ट अधिकारी ने राज्य सरकार के रवैये पर नाराजगी जताई और पुलिस पर जांच एजेंसियों का सहयोग न करने का आरोप लगाया है। गौरतलब है कि बम बनाते समय हुए धमाके में दो संदिग्ध मारें गए , जबकि एक गंभीर रुप से घायल हो गया है। मामले में दो महिलाओं को गिरफ्तार किया गया है, जिन्होने बम बनाने का प्रशिक्षण मिलने की बात कही हैकमरे से मिले जवाहिरी के पर्चे खागरागढ के जिस मकान मं धमाके हुए वहां से अलकायदा प्रमुख अयमान-अल-ज्वाहिरी व इंडियन मुजाहिदीन के अधजले पर्चे मिले है। इसमें अलकायदा के टेप व किताबें भी थी। केंद्रीय एजेंसिया भी घटना में इंडियन मुजाहिदीन, सिमी, लशकर-ए-तैयबा और हरकत-उल-जिहाद-अल-इस्लामी की साजिश मान रही है। बर्द्धमान सहायक पुलिस अधीक्षक तरुण हलदर ने बताया कि गिरफतार महिलाओं का संबध सिमी व अलकायदा से ही सकता है। पुलिस ने नष्ट कर दिए सुबूत - धमाके की जांच कर रही आइबी व राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने बंगाल पुलिस पर मामले को दबाने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि पहले धमाके को एलपीजी सिलेंडर फटने की घटना आई। पुलिस को घटनास्थल से 55 आइईडी डिवाइस, ग्रेनेड, विस्फोटक, घड़ियां, नक्शें, सिम कार्ड आदि मिले थे। पुलिस पे जांच एजेंसियो के आने से पहले ही ग्रेनेड व विस्फोटक सामग्री दामोदर नदी के किनारे नष्ट कर दिया । जांच में पता चला कि सभी आइईडी पूरी तरह तैयार थे और जल्द इनका इस्तेमाल होने वाला था। मारा गया एक संदिग्ध बांग्लादेशी - जांच मं पता चला है कि धमाके में मारे गए दो संदिग्धों में एक शकील अहमद बांग्लादेशी का रहने वाला था । पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के करीमपुर निवासी राजित बीबी उर्फ रुमी से शादी के बाद वह ससुराल आकर रहले लगा था। राजित ने पूछताछ में इसका खुलासा किया। सिमी नेता सफदर नगोरी का नाम भी सामने आ रहा है। नगोरी पांच वर्षो तक पश्चिम बंगाल में सक्रिय रहा है। धमाके मे घायल हसन साहेग का इलाज चल रहा है। वह बीरभूम जिले के मोहम्मद बाजार इलाके का रहने वाला है। उसकी पत्नी मुर्शिदाबाद जिले के लालबाग की अमीना बीबी व शकील की पत्नी राजित बीबी को पुलिस ने गिरप्तार कर लिया है। घटना में एक संदिग्ध सोवन मंडल की भी मौत हो गई थी, जो पश्चिम मेदिनीपुर जिले का निवासी था। मकान मलिक से पूछताछ - संदिग्धो ने कुछ माह पहले ही किराये पर मकान लिया था। धमाके के बाद मकान मालिक हाजी हसन से पूछताछ में इसका पता चला। हसल सिंचाई विभाग का सेवानिवृत्त इंजीनियर है। उसने शकील गाजी के 4200 रुपये में मकान किराये पर दिया था। इसके अलावा हसन मोल्ला नामक एक और व्यक्ति को हिरासत में लिया गया है। स्थानीय निवासी शेख अनवर ने कहा कि ये लोग कपड़े का व्यवसाय करते थे। इनके घर में बुरका पहनकर हमेशा लोग आते - जाते थे। नौ दिन की रिमांड -गिरप्तार अमीना बीबी व राजिरा बीबी को पुलिस ने रविवार को अदालत मं पेश किया, जहां से नौ दिन की रिमांड पर भेज दिया गया । सीआइडी सोमवार को डीजीपी को मामले की रिपोर्ट देगी, जिसे केंद्रीय गृह विभाग को सौंपा जाएगा। इसके बाद मामले की जांच एनआइए को सौंपी जा सकती है।

गृह सचिव ने शुबूत मिटाने के आरोप नकारे

कोलकाता - प्रदेश के गृह सचिव बासुदेव बनर्जी ने पुलिस पर सबूत मिटाने व जांच सहयोग नही करने के आरोपो को खारिज किया है। कहा कि कुछ मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि जिला पुलिस ने घटनास्थल से बरामद आईईडी ग्रेनेड को डिफयूज करने में मानक पद्धति का इस्तेमाल किया। मौके पर सेंट्रेल फारेंसिक लैब के अधिकारी थे। उन्होने मौके से आंतकी संगटन अलकायदा के पोस्टर मिलने की खबरें को भी गलत बताया। उधर वामदल के चेयरमैन विमान बोस ने कहा, धमाके पर राज्य सरकार अपना रुख स्पष्ट करें।

राष्ट्र विरोधी व जेहादी गतिविधियों के लिए पश्चिम बंगाल सुरिक्षत ठिकाना बन गया है। राज्य सरकार के निर्देशपर पुलिस ने सुबूत नष्ट कर दिए हैं।

(सिद्धार्थ नाथ सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय सचिव व बंगाल प्रभारी)

त्योहारो के मौसम में सबसे बड़ी चुनौती होती है कि घर आए मेंहमानो को हल्की-फुल्की चीज क्या परोसी जाए ! इस साल बाजार में मिलने वाले स्नैक्स से अपने सर्विंग प्लेट को सजाने की जगह कुछ आसानी से बनने वाले डिश को पहले से तैयार करके रखिए ।

खुश हो जाएंगे आपके चाहने वाले

आलू अचारी

कितनो लोगो के लिए: 4
कुकिंग टाइम: 30 मिनट

समाग्री

आलू-1/2 किलो, मेंथी-1/4 चम्मच, सरसो-1/2 चम्मच, सौफ-1/2 चम्मच, तेल-2 चम्मच, हींग-चुटकी भर, कलौंजी-1/2 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-1/2 चम्मच , हल्दी पाउडर- 1/4 चम्मच, नमक स्वादानुसार, काला नमक-1/4, चीनी-1 चम्मच, सिरका-2 चम्मच

विधि

आलू को छीलकर काट लें। मेथी, सरसों और सौफ को दरदरा पीस ले। कड़ाही में तेल गर्म करें और उसमें हींग और कलौंजीं डाले। आधे मिनट बाद लाल मिर्च पाउडर और कटे आलू डाले और मिलाएं। आधा कप पानी डाले और आलू के मुलायम होने तक पकाएं। तैयार पाउडर वाले मसाले, नमक, काला नमक और चीनी डाले अच्छी तरह से मिलाएं। सिरका और थोड़ा सा पानी और डाल दें। जब पानी पुरी तरह से सूख जाए तो गैस ऑफ करें। और सर्व करें।

भरवा टमाटर

कितनो लोगो के लिए: 4
कुकिंग टाइम: 30 मिनट

समाग्री

टमाटर-4, उबले आलू-5, पनीर- 100 ग्राम, घी- 1 चम्मच, तेल-आवश्यकतानुसार, बारीक कटी मिर्च-1 चम्मच, बारीक कटी धनिया पत्ती-1 चम्मच, काली मिर्च पाउडर 1/2 चम्मच, नमक स्वादानुसार

विधि

टमाटर के उपरी हिस्से को काटें और भीतर के बीज और गूदे को निकाले दे। आलू और पनीर को कद्दूकस करे और सभी सामग्री को मिला दे। कड़ाही में घी गर्म की और तैयार मिश्रण को चार से पांच मिनट तक लगातार चलाते हुए पकाएं। मिश्रण को टंडा करे और टमाटर में भर दें। अब पैन में तेल गर्म करें और टमाटर को धीमी आचं पर पकाएं। आप चाहें तो माइक्रोवेव में भी इसे पका सकती है।

युवा और वात्स्यायन कामसूत्र

कामसूत्र महर्षि वात्स्यायन द्वारा रचित ऐतिहासिक ग्रंथ है। यौन संबधों पर लिखी गई शायद यह विश्व की पहली पुस्तक है। जिसे ईसा की तीसरी शताब्दी के मध्य में लिख गया । इस ग्रंथ मे यौन प्रेम के सभी सिद्धांतो का वर्णन किया गया है। आज भी जहाँ बड़े पैमाने पर सैक्स को लेकर समाज में संकोच का भाव व्याप्त है, इस किताब में इस पर न सिर्फ खुलकर चर्चा की गयी है, बल्कि इसके महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है। लेकिन, समाज बदल रहा है। युवा पीढीं सैक्स को लेकर पुरातन सोच को दरकिनार कर रही है।

वात्स्यायन द्वारा रचित कामसूत्र में सैक्स के अलावा जीवनशैली के सभी पहलुओं के बारे में विस्तार से वर्णन किया जाता है। जिसका जाने अनजाने अनुसरण आज भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। कामसूत्र को लेकर लोगो के मन यह संदेह है कि यह पूरी किताब केवल और केवल सैक्स पर आधारित है, लेकिन वास्तविकता इससे काफी अलग है। यह सब भ्रांतियाँ इसलिए भी है क्योंकि कामसूत्र के बारे में लोग अधिक नही जानते और न ही इस पर अधिक चर्चा ही की जाती है। आजकल के नवयुवा नैट पर चैटिंग, फेसबुक पर गपशप ज्यादा करते है जिसमें कुछ के टॉपिक कैरियर सम्बंधित होते है और ज्यादातर के टॉपिक्स अश्लील होते है जोकि उनके जीवन में भटकाव और धोखा ही देते है। अज्ञानता के अन्धकार में युवा (लड़की-लडके) बहक जाते है और जीवन की सुखद शुरुआत के बजाय दुःखद अन्त कर बैटते है। ऐसे में यह कामसूत्र का ज्ञान नवयुवाओं को सही मार्गदर्शन देगा और विवाहोपरान्त दाम्पत्य का सुखद आगाज करेगा। यह जानकारी वह वात्स्यायन कामसूत्र डॉट कॉम पर भी सर्च कर सकते है और जीवन को बर्बाद होने से बचा सकते है।

कामसूत्र को वात्स्यायन ने 7 अध्यायों में बांटा है। इसमें आदमी के जीनव के लक्ष्यों और कर्त्तव्यों के बारे मे बताया गया हैं मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को सुखी और सामान्य बना सकता है, इस पर कामसूत्र विस्तार से बताता है। मनुष्य का आचरण और व्यवहार कैसा होना चाहिए, किस तरह से रति-क्रीडा करनी चाहिए आदि का वर्णन इस ग्रंथ में है। आधुनिक जीवन में भी यह युवाओं के लिए प्रासंगिक और फायदेमंद है।

कामसूत्र और युवा

कामसूत्र की प्रासंगिकता तो हर समय बनी रहेगी। युवा पीढीं न केवल सैक्स पर बात करने को लेकर अधिक मुखर हो रही है, बल्कि वह इससे जुडी रुढिवादी सोच को भी छोड़ रही है। युवा सैक्स को केवल अपनी शारीरिक जरुरतो को पूरा करने भर का जरिया नही मानते है, बल्कि वे इसका भरपूर आंनद उटाते है। उन्हें सैक्स को लेकर नए-नए प्रयोग करने से भी गुरेज नही है। वे सैक्स को लेकर पहले से अधिक स्वच्छंद सोच रखने लगे है। कई सैक्स सर्वे लगातार इस बात की ओर इशारा कर रहे है कि सैक्स को लेकर भातर की सोच बदल रही है। युवाओं के लिए अब शादी से पहले सैक्स भी गुनाह नही है। ऐसे में कामसूत्र की महत्ता और अधिक बढ जाती है। कामसूत्र में सुरक्षित सैक्स के बारे में भी तफसील ये बताया गया है। सैक्स करते हुए क्या-क्या सावधानियॉ बरती जाएँ जिससे कि आप सुरक्षित आंनद उटा सकें, इस पर चर्चा की गयी है।

युवा और सैक्स-संबंध

सैक्स कई युवाओं के लिए एक खेल की तरह हो गया है। जिसका आंनद दोनो मिलकर उटाते है। उनके लिए इस खेल में दोनो विजेता होते है। न कोई हारता है और न किसी की जीत होती है। अगर कही कोई 'हार' भी जाए तो वह अपनी हार भी आनंदित ही होता है। इस खेल के व्यवहारिक और उपयोगी नियम-पुस्तिका की तरह ही है-कामसूत्र। यह पुस्तक उनके लिए बहुत फायदेमंद है क्योंकि इसमें संभोग के आयामों जैसे आलिंगन, चुबंनए, इंटरकोर्स, विपरित लिंग रति इत्यादि का वर्णन विस्तार से है। इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए वात्स्यायन ने 64 सैक्स पेजीशन का भी वर्णन किया है।

कामसूत्र के फायदे

आधुनिक समय में युवाओं के बीच कामसूत्र की महत्ता बढीं है। पुराने जमाने में लोग कामसूत्र पर चर्चा करने कतराते थे, लेकिन अब कामसूत्र को सैक्स के प्रति शिक्षित करने वाली पुस्तक के रुप में देखा जा रहा है। संभोग के 64 आसनों के बारे में अध्ययन करने से युवाओं को फायदा होगा और सैक्स संबंध बनाते वक्त गलतियाँ नही होगी और सैक्स के चरमानंद की वास्तविक अनुभूति प्राप्त कर सकेंगे। कामसूत्र यह ज्ञान देता है कि कैसे एक अच्छा सैक्स संबंध जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। सैक्स के दौरा दोनो साथियों की क्या भूमिका होनी चाहिए। पुरुष और स्त्री को सैक्स के दौरा किन बातो पर ध्यान रखना चाहिए।

सूबे में बिजली महंगी

विद्युत नियामक आयोग ने घोषित की गई दरें, 10 से प्रभावी होने की उम्मीद

प्रदेशवाशियों को अब महंगी बिजली का तगड़ा झटका लगेगा। उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग ने बिजली की दरों में औसतन 11.28 फीसदी की बढोतरी की है। घरेलू बिजली की दर में सर्वाधिक 14.38 फीसदी का इजाफा किया गया है। नई दरें इस तरह से तय की गई है जिससे ज्यादा बिजली का उपयोग करने वाले उपभोक्ता को अधिक बिल देना होगा । समय से बिल अदा करने वालों को कुछ राहत भी मिलेगी। आयोग ने संबधित आदेश पावर कारपोरेशन प्रबंधन को भेज दिया है जो इसे लागू करने की तिथि तय करेगा।

विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष देश दीपक वर्मा ने बुधवार को वित्तीय वर्ष 2014-15 के लिए बिजली की दरें घोषित की। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि बिजली की मौजूदा दरों में औसतन 8.90 फीसद का इजाफा किया गया है। घरेलू बिजली की दरों में औसतन 12 फीसद, उद्योगों की दरों में 7.38 फीसद, कामर्शियल (व्यावसायिक) में 6.28 व कृषि क्षेत्र (सरकारी ट्यूबवेल सहित) में 12.20 फीसद की औसत बढोतरी की गई है। राज्य में सूखें की स्थिति करे देखते हुए गांव के बिना मीटर वाले निजी ट्यूबवेल की बिजली दरों को यथावत रखा गया है। सभी श्रेणियों के उपभोक्ता पर 2.38 फीसद (केस्को के उपभोक्ता के लिए 2.23 फीसद) को रेग्यूलेटरी सरचार्ज भी लगाया गया है। इस तरह से आयोग ने बिजली की बर्तमान दरों में औसतन 11.28 फीसद का इजाफा किया है। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष बिजली की दरों में औसतन 10.29 फीसद का इजाफा किया गया था। लगभग 16 माह बाद फिर बिजली की दरों में बढोतरी की गई है। ज्यादातर श्रेणियों के लिए फिक्स चार्ज की दरें यथावत रखी गई है। वर्मा ने बताया कि बार आयोग ने बिजली दरो को कंपनियो के परफामेंस से जोड़ा है। अज बिजली कपंनिया को लाइन लॉस कम करना ही होगा। चालू वित्तीय वर्ष के अंत तक कपंनियो को 4.08 फीसद (27.60 से 23.52 फीसद) विद्युत वितरण हानि को घटाना होगा। कंपनियों को इस साल 36 लाख नए कनेक्शन देने होगें। साथ बिना मीटर वाले बिजली कनेक्शनो में 31 मार्च तक मीटर लगाना होगा। मीटर लगवाने वाले उपभोक्ताओं को प्रोत्साहन स्वरुप मीटर श्रेणी के लिए लागू दर में 10 फीसद की छूट मिलेगी। अध्यक्ष ने कहा कि लक्ष्य के मुताबिक लाइन लॉस न घटाने या कनेक्शन न देने पर कंपनियों को 10 फीसद राजस्व का नुकसान उटाना पड़ेगा। आयोग, कंपनियों के मौजूदा सरचार्ज और प्रस्तावित एआरआर (वार्षिक राजस्व आवश्यकता) को 90 फीसद तक ही अनुमन्य करेगा। समय से बिल जमा करने वाले उपभोक्ताओं को अब कुल बिल पर 0.25 फीसद की छूट भी मिलेगी। समय से बिल न जमा करने वाले उपभोक्ता एकमुश्त योजना (ओटीएस) का लाभ नही उटा सकेगें। बकाएदार उपभोक्ताओं को तीन वित्तीय वर्ष में एक बार ही ओटीएस का लाभ मिलेगा। अध्यक्ष ने बताया कि बिजली संकट को देखते हुए सोलर वाटर हीटर लगाने वाले उपभोक्ताओं को 100 रुपये प्रतिमाह की छूट भी मिलेगी। वर्मा ने बताया कि बिजली का कनेक्शन कटवाने के लिए अब दो वर्ष के बजाय छह माह का ही फिक्स चार्ज देना होगा।

बिजली की नई दरें लागू करने के संबंध में पावर कापोरेशन के चेयरमैन संजय अग्रवाल ने बताया किन नई दरों का आदेश उन्हें मिल गया है। दरों से संबधित विज्ञापन जल्द ही अखबारों मं प्रकाशित होगा। नियमानुसार दरें प्रकाशित होने के सात दिन बाद ही लागू हो सकती है। ऐसे मं माना जा रहा है कि नई बिजली की दरें 10 अक्टूबर के बाद से कभी भी लागू हो सकती है।

कुछ इस तरह लगेगा तगड़ा झटका

- बिजली दर मे 2.38 फीसद सरचार्ज सहित 11.28 फीसद का इजाफा
- घरेलू बिजली दरों में सर्वाधिक 14.38 फीसद की बढोतरी
- ज्यादा बिजली खर्चे पर अधिक देना होगा बिल
- बिजली कंपनियों को सभी कनेक्शन में 31 मार्च तक लगाने ही होगें मीटर
- वित्तीय वर्ष के दौरान कंपनियो को देना होगा 36 लाख कनेक्शन
- समय से बिल जमा करने पर अब मिलेगी 0.25 फीसद की छूट
- सोलर वाटर हीटर लगाने पर प्रति माह मिलेगी 100 रुपये की छूट

दिल्ली में रहते है, सबसे अमीर

सुस्ती की वजह से देश की आर्थिक विकास की दर भले बहुत घट गई हो, मगर दिल्ली उन राज्यों में शामिल है जहां के लोग तेजी से अमीर हो रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी में प्रति व्यक्ति आय देश के तमाम अन्य राज्यों के मुकाबले बहुत तेजी से बढ़ी है बीते पांच वर्षो में दिल्ली में प्रति व्यक्ति आय में 73 फीसद का इजाफा हुआ है। बिहार ओडिशा जैसे राज्यों के निवासियों की प्रति व्यक्ति सालाना आय भी तेजी से बढ़ती दिख रही है। इसके बावजूद कुल आय के मामले में ये राज्य अभी काफी पीछे है। रिजर्व बैंक ने देश की आर्थव्यवस्था पर अपनी सालाना रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट में निश्चित तौर पर अमीर और गरीब राज्यों के बीच बढ़ते फासले की तस्वीर दिखती है। दिल्ली, ओडिशा, पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की अर्थव्यवस्था में सुधार के लक्षण दिख रहे हैं। इसके बावजूद इन्हें तेजी से अमीर होते अन्य राज्यों के साथ कदमताल मिलाने में अभी वक्त लगेगा। मसलन पिछले पांच वर्षो में बिहार की प्रति व्यक्ति आय 47.15 फीसद बढ़कर 2013-2014 में यह महज 15.650 रुपये पर पहुंच पाई। इसी दौरान दिल्ली में प्रति व्यक्ति आय का आंकड़ा 97.525 रुपये से बढ़कर 1,27,667 रुपये हो गया है। यानी 71.92 फीसद की वृद्धि इस मामले में सिर्फ गोवा ही दिल्ली को मुकाबला देते दिख रहा है। हिमाचल प्रदेश में यह आंकड़ा 25.30 फीसद वृद्धि के साथ 54,494 रुपये हो गया है। वहीं उत्तराखंड में यह बढ़कर 56,822 रुपये पहुंच गया। यानी 27.56 फीसद की बढ़त। ऐसी ही तस्वीर तब उभरती है जब पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश सरीखे राज्यों की तुलना कार्नाटक और महाराष्ट्र सरीखे सूबों से करें। इन पांच वर्षो में यूपी वासियों की प्रति व्यक्ति आय 17.35 फीसद ही बढ़ी है। लेकिन इसी दौरान यह कर्नाटक में 71, महाराष्ट्र में 64 फीसद बढ़ गई। इन दोनों राज्यों की प्रति व्यक्ति आय पहले से ही उत्तर प्रदेश के मुकाबले 3-4 गुना ज्यादा है। बेहद पिछड़े माने जाने वाले पूर्वोत्तर के सूबे अमूमन बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा जैसे राज्यों से आगे निकल चुके हैं। इस रिपोर्ट में राज्यों के तेज विकास या मंद विकास की वजहें तो नहीं बताई गई हैं। लेकिन जिस तरह इसमें सभी राज्यों के बीच तुलनात्मक आंकड़े पेश किए गए है। उससे राज्य सरकारों के साथ ही केंद्र को भी सबक सीखना होगा।

30 रुपये प्रति शेयर लाभांश और बोनस की घोषणा

देश की दूसरी सबसे बड़ी आइटी सेवा कंपनी इंफोसिस ने उम्मीद से बेहतर मुनाफा दर्ज किया है। सितंबर को समाप्त दूसरी तिमाही में कंपनी का मुनाफा 28.6 फीसद की वृद्धि के साथ 3,096 करोड़ रुपये पहुंच गया । पूर्व वित्त वर्ष की इसी अवधि में उसे 12,047 करोड़ रुपये का लाभ हुआ थां चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कंपनी ने 2,886 करोड़ रुपये का शुद्ध मुनाफा कमाया था।

लाभांश की घोषणा

शानदार नतीजों से उत्साहित इंफोसिस ने 30 रुपये प्रति शेयर अंतरिम लाभांश और एक के बदले एक शेयर बोनस में देने का दलान किया है। बानेस एडीआर शेयरधारको के लिए भी लागू होगा। कंपनी ने वित्त वर्ष 2015 के लिए आये में 7-9 फीसद बढ़ोतरी का अनुमान बरकरार रखा है। बीएसई में इस दिन कंपनी का शेयर 6.68 फीसद की वृद्ध क्के साथ 3,888.95 रुपये पर बंद हुआ। जुलाई-सिंतबर तिमाही में कंपनी की एकीकृत कुल आय भी 2.9 फीसद बढ़कर 13,342 करोड़ रुपये पर पहुंच गई, जो पिछले साथ की समान अवधि में 12,965 करोडद्व रुपये थी।

नतीजे काफी अच्छे

इंफोसिस के एमडी व सीईओ विशाल सिक्का ने कंपनी के नतीजों को संतोषजनक करार दिया। उन्होंने कहा कि कंपनी के बीपीओ करोबार में तेजी आई है। डिजिटल युग में कंपनी की ग्रोथ के लिए अपार संभावनाएं है।

जुड़े नए ग्राहक

तिमाही के दौरान इंफोसिस और इसकी सहयोगी कंपनियों से 49 नए ग्राहक जुड़े। इस दौरान कंपनी ने 14,255 कर्मचारियों की नियुक्ति की यह और बात है कि इस अवधि में कंपनी को छोड़कर जाने वालो की संख्या काफी ज्यादा रही।

ठुकराया पद

इंफोसिस के सह-संस्थापक एनआर नारायणमूर्ती ने कंपनी में चेयरमैन एमेरिटस का पद ठुकरा दिया है। कंपनी ने इसकी पेशकश की थी। उन्होंने कहा कि वे नही चाहते कि कंपनी में हितों का कोई टकराव हो। कंपनी ने मूर्ति के फैसले को स्वीकार किया।

पिछले 5 वर्षो में प्रति व्यक्ति आय

राज्य	2009-10	2013-14	वृद्धि
दिल्ली	97,525	1,27,667	71.92
हरियाणा	55,525	1,27,667	22.30
पंजाब	42,821	49,411	15.36
उत्तर प्रदेश	16,390	19,234	17.35
बिहार	10,645	15,650	47.15

(रुपये में)

भारत ने पाक को हराकर जीता सोना

आखिरी बार भारत ने 1998 में बैकांक में जीता था सोना ,32 साल बाद फाइनल में आमने - सामने थी दो पड़ोसी टीमें
1982 एशियाड के फाइनल में मिली हार का हिसाब बराबर

भारतीय हॉकी टीम ने गुरुवार को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के खिलाफ 'ड्रीम फाइनल' में ऐतिहासिक जीत हासिल करते हुए एशियन गेम्स हॉकी में स्वर्ण पदक के 16 सालो के इंतजार को खत्म किया।इस जीत के साथ भारतीय टीम ने अगले साल रियो में होने वाले ओलंपिक में भी सीधे प्रवेश पा लिया। निर्धारित 60 मिनट तक स्कोर 1-1 से बराबर रहने पर मुकाबला पेनाल्टी शूटआउट में चला गया, जिसमें भारत ने चार गोल किए, जब-कि गत चैंपियन पाकिस्तान दो गोल ही कर सका।

भारत ने आखिरी बार 1998 में बैकांक में हुए एशियन गेम्स का स्वर्ण पदक जीता था, जबकि से दोनो टीमें पिछली बार फाइनल में 32 साल पहले 1982 में दिल्ली एशियाड में आमने-सामने हुई थी। एशियाई खेलो की शुरुआत भारत में 1951 से हुई और 1958 से हॉकी को शामिल किया गया। एशियाड में पाकिस्तान की टीम एशियाड में आठ बार चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया है।

भारत के लिए आकाशदीप सिंह, रुपिंदर पाल सिंह, बीरेंद्र लकड़ा और धरमवीर सिंह ने पेनाल्टी शूटआउट में गोल दागें, जबकि मनप्रीत सिंह नाकाम रहें। वही पाकिस्तानके लिए वकास अहमद और शफकत रसूल ने गोल दागें, जबकि भारतीय गोलकीपर श्रीजेश ने मुहम्मद हसीम खान और मुहम्मद उमर भुट्टा को गोल नही करने दिया। पाकिस्तान के लिए मु-हम्मद रिजवान सीनियर ने तीसरे ही मिनट मे गोल दाग कर टीम को बढ़त दिला दी। गेंद पर ज्यादातर कब्जा भारतीय खिलाड़ियों का ही रहा, जिसका फायदा 27वें मिनट में मिला जब कोथाजीत सिंह ने गोलकर स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। भारतीय टीम ने विपक्षी गोलपोस्ट पर लगातार हमले किए, लेकिन पाकिस्तान डिफेंस भेदने में वे नाकाम रहे। कुछेक मौके पर पाकिस्तान ने भी अच्छा काउंटर अटैक किया, लेकिन भारतीय डिफेंडरो ने उन्हें फायदा नही उठाने दिया और मैच निर्धारित समय में 1-1 के बराबर स्कोर के बाद शूटआउट में चला गया। हॉकी इंडिया ने स्वर्ण पदक जीतने वाली पुरुष टीम के हर खिलाड़ी को ढाई-ढाई लाख रुपये देने की घोषणा की। हाई परफामेंस डायरेक्टर रोलेट,ओल्टमेंस, मुख्य कोच टेरी वॉल्श को भी ढाई-ढाई लाख रुपये दिए जाएगें। सहयोगी स्टाफ की एक-एक लाख रुपये दिया जाएगा। महिला हॉकी टीम की प्रत्येक सदस्य को एक-एक लाख दिया जाएगा और सहयोगी स्टाफ को 50-50 हजार मिलेगें।

पदक तालिका

एशियन गेम्स में भारतीय हॉकी टीम का प्रदर्शन

1958 (टोक्यो)	रजत पदक
1962 (जकार्ता)	रजत पदक
1966 (बैकांक)	स्वर्ण पदक
1974 (तेहरान)	रजत पदक
1978 (बैकॉक)	रजत पदक
1982 (नई दिल्ली)	रजत पदक
1986 (सियोल)	कांस्य पदक
1990 (बीजिंग)	रजत पदक
1994 (हिरोशिमा)	रजत पदक
1998 (बैकॉक)	स्वर्ण पदक
2002 (बुसान)	रजत पदक
2006 (दोहा)	पहले दौर में बाहर
2010 (ग्वांगझू)	कांस्य पदक
2014 (इंचियोन)	स्वर्ण पदक

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

अधि-नीतिशास्त्र और मानकीय नीतिशास्त्र

संघ लोक सेवा आयोग और विभिन्न राज्यों के लोक सेवा आयोगों ने अपनी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में नीतिशास्त्र सत्यनिष्ठा, अभिवृत्ति और प्रशासन में नीति आदि विषयों को शामिल किया है। यहां इस पेपर के लिए उपयोगी सामाग्री दी जा रही हैं।

जबसे मनुष्यने दूसरों के साथ मिलकर समाज का निर्माण किया और उसी में रहकर अन्य व्यक्तियों के सहयोग से अपनी समस्याओं का समाधान खोजने लगा तभी से उसे कुछ ऐसे नियमों की आवश्यकता पड़ी जो उसकी तथा दूसरे मनुष्यों की इच्छाओं, रूचियों, आकांक्षाओं, उद्देश्यों और स्वार्थों में होने वाले संघर्ष को कम या समाप्त कर सकें। कालांतर में धीरे-धीरे इन्हीं नियमों तले सामाजिक परंपराओं या रीति-रिवाजों का रूप ग्रहण कर लिया जिनका पालन करना समाज के सदस्य के रूप में प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक समझा जाने लगा। असल में इन सामाजिक परंपराओं,रूढ़ियों या रीति-रिवाजों से ही उस शास्त्रया विज्ञान का विकास हुआ जिसे आज हम नीतिशास्त्र नीति दर्शन कहते है। मानवीय नीतिशास्त्र हमें यह बताता है कि मनुष्य के लिए स्वतः साध्य शुभ क्या है, उसके कौन से कर्म उचित हैं और कौन-से अनुचित, अपने प्रति और दूसरों के प्रति उसका कर्त्तव्य क्या है।शुभ, अशुभ तथा उचित, अनुचित अथव कर्तव्य का निर्धारण किन नैतिक सिद्धांतो के आधार पर किया जा सकता है आदि। मानव जीवन के लिए परम शुभ तथा कर्तव्य के संबंध में सामान्य एवं सार्वभौमिव नैतिक सिद्धांतो का प्रतिपादन करना और समुचित तर्को द्वारा इन सिद्धांतो को यक्तिसंगत सिद्ध करना मानवीय नितिशास्त्र का उद्वेश्य है। इन सार्वभौतिक नैतिक सिद्धांतों द्वारा मानवीय नीतिशास्त्र व्यावहारिक जीवन में मनुष्य का मार्गदर्शन करता है। मिसाल के तौर पर सुखवाद एक मानवीय नैतिक सिद्धान्त है जो हमें बताता है कि सुख ही मनुष्य के लिए परम शुभ है, इस तरह सुख के आधार पर ही उसके कर्मो के औचित्य व कर्त्तव्य का निर्णय किया जा सकता है।

मानकीय नीतिशास्त्र हमें यह बताता है कि हमारे शुभ क्या है और हमें क्या करना चाहिए, जबकि अधि-नीतिशास्त्र "अमुक वस्तु हमारे लिए शुभ है" तथा "अमुक कर्म करना हमारा कर्त्तव्य है" इन नैतिक निर्णयों के अर्थ एवं स्वरुप का स्पष्टीकरण तथा विश्लेषण करता है। मानकीय नीतिशास्त्र मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए प्रतिपादित नैतिक सिद्धान्तों के समर्थन में तर्क प्रस्तुत करता है, जबकि अधि-नीतिशास्त्र इन तर्कों की प्रमाणिकता की निष्पक्ष रुप से परीक्षा करता है। उपर्युक्त अंतर से नैतिक दर्शन की इन दोनों विधाओं का भिन्न स्वरुप तथा क्षेत्र भली भांति स्पष्ट हो जाता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अधि-नीतिशास्त्र वास्तव में मानकीय नीतिशास्त्र का पूरक है। अधि-नीतिशास्त्र उन नैतिक निर्णयों के अर्थ और स्वरुप का स्पष्टीकरण तथा विश्लेषण करता है जो हम मानवीय नीतिशास्त्र के सिद्धान्तो के अनुसार अपने व्यावहारिक जीवन में करते है। इसी प्रकार अधि-नीतिशास्त्र उन तर्कों के स्वरुप को स्पष्ट करता है जो मानकीय नीतिशास्त्र अपने नैतिक सिद्धान्तो की पुष्टि के लिए प्रस्तुत करता है। अधि-नीतिशास्त्र वास्तव में मानवीय नीतिशास्त्र का ज्ञान बहुत जरुरी है। इस दृष्टि से मानकीय नीतिशास्त्र के पूरक के रुप में अधि-नीतिशास्त्र का विशेष महत्व है। केवल अधि-नीतिशास्त्र को ही संपूर्ण नैतिक दर्शन मान लेना अनुचित और एकांगी दृष्टिकोण है जिसका कुछ समकालीन दार्शनिकों ने समर्थन किया है। मिसाल के तौर पर ए0 जे0 एयर अधि-नीतिशास्त्र को नही। वे पी0एच0 नावलस्मिथ की पुस्तक 'ऐथिक्स' के विषय में अपना मत व्यक्त करते हुए कहते है कि 'नीतिज्ञ तथा नैतिक दार्शनिक के कार्य में अंतर है जिसकी ओर पर्याप्त ध्यान नही दिया गया है। नीतिज्ञ नैतिक नियमों का प्रतिपादन करता है अथवा उनका पालन करने के लिए लोगो को प्रोत्साहित करता है, परंतु नैतिक दार्शनिक का मुख्य कार्य नैतिक निर्णय देना नही अपितु उनके स्वरुप का विश्लेषण करना है। अपने इसी मत को और अधिक स्पष्ट करते हुए एयर ने 'फिलॉसफिकल एसेज' में लिखा है कि "नैतिक दर्शन के लिए प्रश्न यह नही है कि कोई विशेष कर्म उचित या अनुचित कहने का अर्थ क्या है।

अधि- नीतिशास्त्र वास्तव में मानकीय नीतिशास्त्र को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। मानकीय नीतिशास्त्र के निर्णयों व सिद्धान्तों के अभाव मे अधि-नीतिशास्त्र की कोई आवश्यकता ही नही रह जाती, इसलिए इस दृष्टि से वह अपने अस्तित्व और अपनी सार्थकता के लिए आखिरकार मानकीय नीतिशास्त्र पर ही निर्भर है। ऐसी स्थिति में अधि-नीतिशास्त्र को ही अपने आप में साध्य और संपूर्ण नैतिक दर्शन मान लेना हमारी बड़ी भूल होगी। जो दार्शनिक ऐसा मानते है वे साफतौर पर तथ्यों की उपेक्षा करते है। असल में अधि-नीतिशास्त्र स्वतः साध्य तथा संपूर्ण नैतिक न होकर नैतिक दर्शन की एक बहुत महत्वपूर्ण विधा है जिसकी मदद से हम नैतिक भाषा के अर्थ और स्वरुप को भली-भाति समझ सकते है।

यूपी के 9 यूनिवर्सिटी फर्जी

यूजीसी की वेबसाइट पर देश के 21 फर्जी विश्वविद्यालय की सूची जारी

कानपुर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देशभर में अवैध रुप से संचालित 21 फर्जी विश्वविद्यालय की सूची अपनी वेबसाइट पर सार्वजनिक कर दी है। 18 दिसंबर को यूजीसी की बेवसाइट पर अपलोड की इस सूची में इंद्रप्रस्थ शिक्षा परिषद इंस्स्टीटयूशंस एरिया खोड़ा मानकपुर नोएडा समेत यूपी के नौ विश्वविद्यालय को अवैध बताया गया है। खास बात यह है कि इस सूची में सर्वाधिक नाम यूपी से है। समय - समय पर छात्र हित को ध्यान में रखकर यूजीसी देश में अवैध रुप से संचालित हो रहें है। विश्वविद्यालय के नाम सार्वजनिक करती है। इस सूची में उन संस्थानों यूनिवर्सिटी के नाम को अवैध करार दिया जाता है तो यू-जीसी एक्ट 1956 के खिलाफ बिना अनुमति के संचालित होते है। इन संस्थानों से ली गई डिग्री अथवा डिप्लोमा को यूजीसी से मान्यता प्राप्त नही होती है। इसके चलते ही यहां से पढ़ने वाले स्टूडेंट्स की डिग्री को सरकारी और प्राइवेट नौकरी में फर्जी करार दिया जाता है। बेवसाइट पर डाली गई सूची में यूजीसी ने साफ लिखा है कि इन सभी संस्थानों/यूनिवर्सिटी को डिग्री देने का कोई अधिकार नही है। यूपी के अलावा बिहार की एक दिल्ली की पांच, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल की एक यूनिवर्सिटी शामिल है।

फर्जी विवि की सूची

- इंद्रप्रस्थ शिक्षा परिषद इस्स्टीटयूशंस एरिया खोड़ा मानकपुर नोएडा
- वाराणसेयं संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी यूपी
- महिला ग्राम विद्यापीट यूनिवर्सिटी (वीमेंस यूनिवर्सिटी) प्रयाग इलाहाबाद यूपी
- गांधी हिंदी विद्यापीट,प्रयाग इलाहाबाद यूपी
- नेताजी सुभाष चंद्र बोस यूनिवर्सिटी (ओपेन यूनिवर्सिटी) अलीगढ़
- उत्तर प्रदेश यूनिवर्सिटी कोशी कला मथुरा यूपीं
- महाराणा प्रताप शिक्षा निकेतन यूनिवर्सिटी प्रतापगढ़ यूपी
- गुरुकुल विश्वविद्यालय वृंदावन यूपी
- नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ इलेक्ट्रो कॉम्प्लेक्स होम्योपैथी कानपुर।

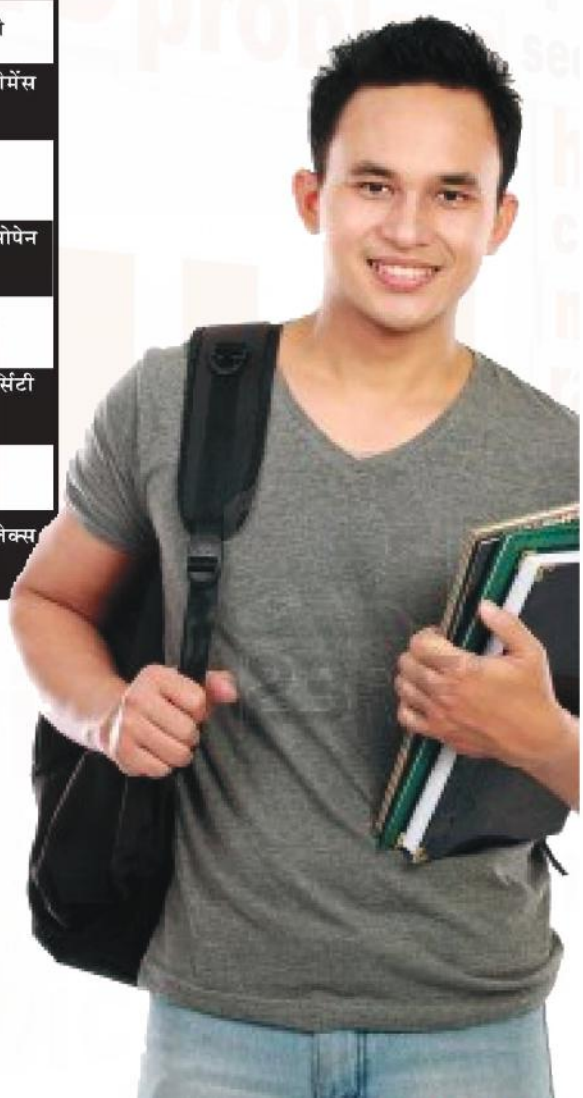

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

भविष्य और आपका कल

मेष
Aries

(मार्च 21 अप्रैल 19)

आपके लिए यह माह तनाव लेकर आ सकता है। आपको अपने लिए सही दिशा का चुनाव करना होगा। आर्थिक क्षेत्र में भी बहुत समझदारी से काम लेना होगा। आप दूसरों की मदद भी ले सकते है। भाग्यशाली रंग - हल्का नीला ।

वृषभ
Taurus

(अप्रैल 20 से मई 20)

अक्टूबर माह आपके जीवन में कुछ बदलाव लेकर आएगा कार्यक्षेत्र में नयी शुरुआत होगी। सकारात्मक व्यवहार अपनाना होगा। आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थ्य को लेकर सर्तकता बरतनी पड़ सकती है। भाग्यशाली रंग - सफेद ।

मिथुन
Gemini

(मई 21 से जून 20)

पूरा माह ऊर्जा से भरपूर रहेगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की मिलेगी। रिश्तों के मामले में भी थोड़ा - बहुत तनाव झेलना पड़ सकता है। धन लाभ होगा। आत्मविश्वास बनाये रखें स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। भाग्यशाली रंग - हरा नीला।

कर्क
Cancer

(जून 21 से जुलाई 22)

इस माह आपके कार्ड्स स्थान-परिवर्तन के बारे में बता रहें है। कार्यक्षेत्र में पुराने अनुभवो का प्रयोग करें। सफलता अवश्य मिलेगी। धन लाभ हो सकता है। खुशियां प्राप्त होगी। नये रास्ते खुलते नजर आएगें भाग्यशाली रंग - सफेद / बैंगनी।

सिंह
Leo

(जुलाई 23से अगस्त 22)

माह के प्रारभ में परिस्थितियां असमंजस से भरपूर रहेंगी। आर्थिक दृष्टि से लाभ मिलेगा। अपने कार्य व रिश्तो मे संतुलन बना पायेगें। व्यवहार में खुलापन लाना होगा। भाग्यशाली रंग - पीला/हरा ।

कन्या
Virgo

(अगस्त 23 से सितम्बर 22)

आपके लिए यह माह अति उत्तम रहेगा। माह की शुरुआत किसी अच्छी खबर के साथ होगी । कार्यक्षेत्र में कामयाबी मिलेगी। किसी भी कागज पर पढ़े बिना हस्ताक्षर न करें। भाग्यशाली रंग - लाल

तुला
Libra

(सितम्बर 23 से अक्टूबर 22)

अक्टूबर माह में अर्थव्यवस्था गड़बड़ हो सकती है । नई चुनौतियां आपका इंतजार कर रही है। पैसे का सही निवेश आवश्यक रहेगा। यात्रा की संभावना है। स्वास्थ्य अच्छा रहेंगा । भाग्यशाली रंग - हल्का नीला।

वृश्चिक
Scorpio

(अक्टूबर 23 से नवम्बर 21)

माह की शुरुआत संवेदनाओं व भावनाओं के साथ होगी। उपल्बधियों और अवसरों के बीच अच्छा संतुलन बना पायेगें। माह के अंत में सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बरतनी होगी। भाग्यशाली रंग - हरा।

धनु
Sagittarius

(नवम्बर 22 से दिसम्बर 21)

माह की शुरुआत कड़ी मेंहनत के साथ होगी। आपको इसके अच्छे परिणाम भी मिलेंगे। आपको अपना आत्म-मूल्यांकन करने और आत्मविश्वास बढाने की जरुरत है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा । भाग्यशाली रंग - बैगनी।

मकर
Capricorn

(दिसम्बर 22 से जनवरी 19)

अक्टूबर माह में आपके लिए यात्रा के संजोग बन रहे है। यदि आपका मन किसी काम को करने की गवाही नही दे रहा, तो उसे मत करें । किसी कार्य में पैसे लगाने पड़ सकते है। भाग्यशाली रंग - सफेद ।

कुंभ
Aquarius

(जनवर 20 से फरवरी 18)

आपके लिए यह माह काफी मिला-जुला रहेगा। शुरुआत में आर्थिक निवेश को लेकर बड़ो के साथ कुछ कहा सुनी हो सकती है। आपके जीवन में काफी सक्रिय बदलाव आएंगे। भाग्यशाली - नारंगी।

मीन
Pisces

(फरवरी 19 से मार्च 20)

माह की शुरुआत थोड़ी-बहुत रुकावटो के साथ होगी । लेकिन, इसके बाद कामयाबी, तरक्की व खुशियों का स्वाद भी चखने को मिलेगा । कार्यक्षेत्र में काफी बड़ी जिम्मेदारिया मिल सकती है। भाग्यशाली रंग - गुलाबी।

ऑफिस में आध्यात्मिकता

जिस जगह हम अपने दिन के चौबीस घंटो में से आठ घंटे बिताते हैं अगर उसी जगह की हवा में एक-दूसरे के लिए जलन,नफरत, सियासत, मुकाबले का जहर घुलने लगे, तो वहां घुटन पैदा होने लगता है और तब हमारा काम करना मुश्किल हो जाता है। इसेसे बचने के लिए आध्यात्मिक नियमों की याद दिला रही हैं ताकि हम ऑफिस की उन परेशानियों को सुलक्षा सकें जिनका सामना हमें चाले-अनचाहे अक्सर करना पड़ता है।

आशा खबर

आपकी आशा, आपकी खबर

सच का दम

अब आपके शहर इलाहाबाद से प्रकाशित

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

ऑस्कर की ओर हिडन कैमरे की फिल्म

ऑस्कर के लिए और भी फिल्में हिंदुस्तान से नामांकित होती रही है, लेकिन 'लायर्स डाइस' की बात ही कुछ अलग है। यह फिल्म हिडन कैमरे से क्यों शूट की गई बता रहे है, फिल्म के अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दकी

हिमाचल प्रदेश के अंतिम गांव चितकूल और दिल्ली तक का सफर तय करते हुए बनी फिल्म 'लायर्स डाइस' दरअसल एक रोड ड्रामा है जो सफर में शुरु होती है और सफर में ही खत्म हो जाती है। फिल्म की शूटिंग भी चलती रही और आसपास वालों तक को भनक न लग सकी। शूटिंग के लिए सब जगह हिडेन कैमरे लगाए गए थे। मलयाली एक्ट्रेस गीतू मोहन दास की यह पहली फिल्म है। फिल्म में मै एक ऐसा फौजी बना हूं जिसे कि फौज से निकाल दिया जाता है। फिल्म में अपनाई गई वास्तविकता ने इसे बेहद पॉपुलर बना दिया। अमेरिका में हुए सन्डांस फिल्म फेस्टिबल में भी फिल्म की बहुत तारीफ हुई। फिल्म के अनूठेपन ने ही इसे नेशनल अवॉर्ड दिलाया मुझें उम्मीद नही थी कि मेरी यह फिल्म ऑस्कर के लिए नामिनेट होगी ।यह फिल्म बाकी फिल्मो से बिल्कुल अलग है। इसकी शूटिंग सिर्फ 20 दिनों में पूरी कर ली गई । बालीवुड की फिल्म के एक गाने को शूट करने में जितने खर्च आता है उतने में तकरीबन यह पूरी फिल्म बल गई। यह फिल्म ऐसी नही थी कि हम यहां एक्टर की तरह व्यवहार करते, मुझे एक आम और लोकल आदमी बनना और दिखना था, बिल्कुलउन जैसा जिनके बीच फिल्म शूट हो रही थी। कितना उन जैसा दिख पाता हूं यही परीक्षा थी। या तो कोई अच्छा होगा या बुरा,लोगो की इस राय के बीच का किरदार निभाना, एक मिस्ट्री बने रहना.. यह सब चैलेजिंग था। यह मेंरी पहली ऐसी फिल्म है जिसमें मुझे कोई खास नही बल्कि आम आदमी दिखने के लिए मेहनत करनी पड़ी। मैने अपना एक फ्रेम तैयार करने में बहुत मेहनत की, जिससे न तो मुझे बाहर निकलना था और न ही सिकुड़ना था। चितकूल जैसे पहाड़ी गांव के सामान्य जीवन के साथ ही चंडीगढ़ और दिल्ली की फास्ट लाइफ में खुद को ढालना आसान नही था। यह फिल्म माइग्रेशन कर संघर्ष करने वालो के जीवन पर बनी है जो अपने परिवारको छोड़कर गांव से शहरो की ओर पैसा कमाने निकल पड़ते हैलेकिन वापस नही आ पाते है।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

बिग बी ने कहा, हिन्दी सिनेमा को कोई 'खतरा' नही

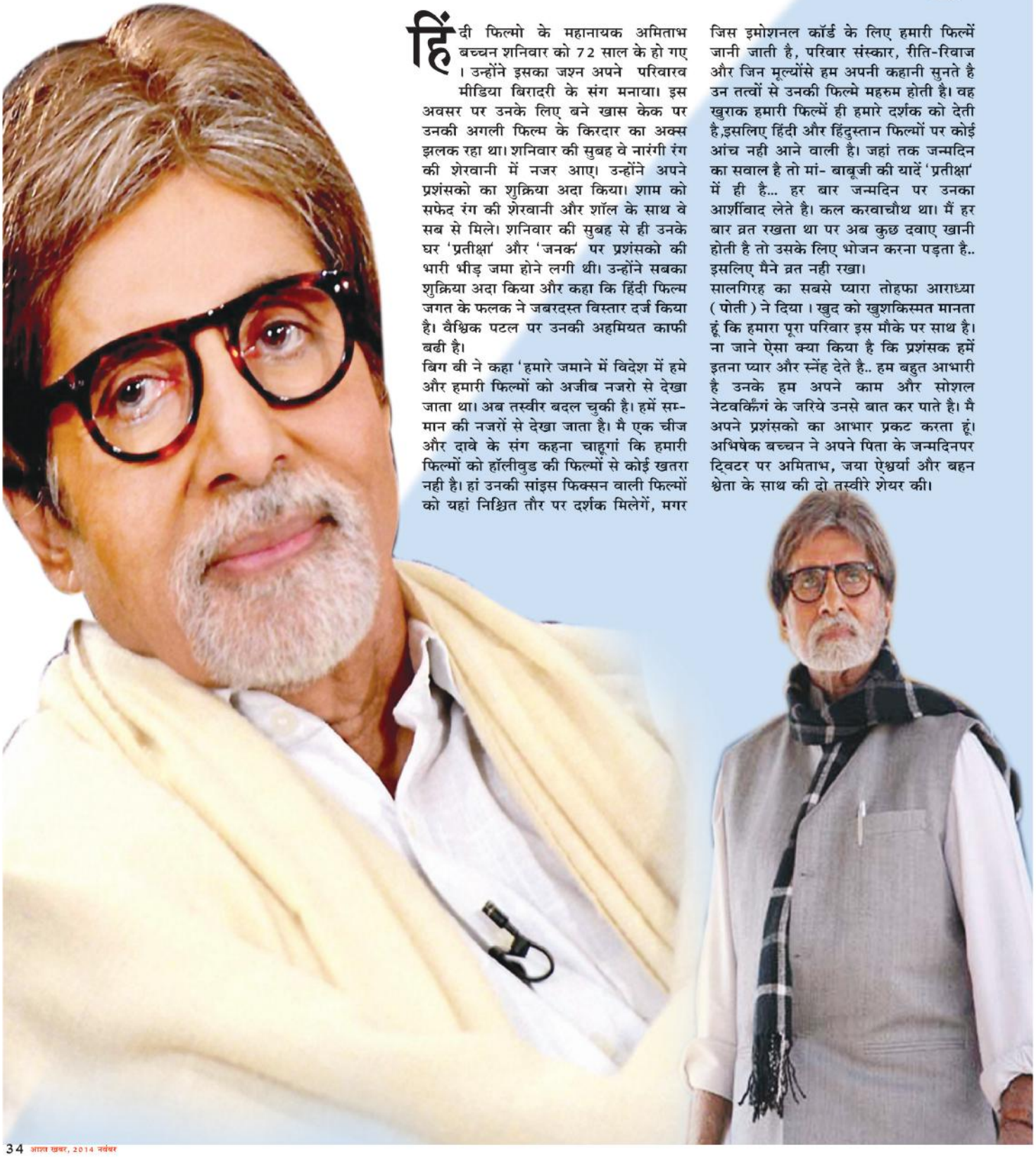

हिंदी फिल्मो के महानायक अमिताभ बच्चन शनिवार को 72 साल के हो गए । उन्होंने इसका जश्न अपने परिवारव मीडिया बिरादरी के संग मनाया। इस अवसर पर उनके लिए बने खास केक पर उनकी अगली फिल्म के किरदार का अक्स झलक रहा था। शनिवार की सुबह वे नारंगी रंग की शेरवानी में नजर आए। उन्होंने अपने प्रशंसको का शुक्रिया अदा किया। शाम को सफेद रंग की शेरवानी और शॉल के साथ वे सब से मिले। शनिवार की सुबह से ही उनके घर 'प्रतीक्षा' और 'जनक' पर प्रशंसको की भारी भीड़ जमा होने लगी थी। उन्होंने सबका शुक्रिया अदा किया और कहा कि हिंदी फिल्म जगत के फलक ने जबरदस्त विस्तार दर्ज किया है। वैश्विक पटल पर उनकी अहमियत काफी बढी है।

बिग बी ने कहा 'हमारे जमाने में विदेश में हमे और हमारी फिल्मों को अजीब नजरो से देखा जाता था। अब तस्वीर बदल चुकी है। हमें सम्-मान की नजरों से देखा जाता है। मै एक चीज और दावे के संग कहना चाहूगां कि हमारी फिल्मों को हॉलीवुड की फिल्मों से कोई खतरा नही है। हां उनकी सांइस फिक्सन वाली फिल्मों को यहां निश्चित तौर पर दर्शक मिलेगें, मगर जिस इमोशनल कॉर्ड के लिए हमारी फिल्में जानी जाती है, परिवार संस्कार, रीति-रिवाज और जिन मूल्योंसे हम अपनी कहानी सुनते है उन तत्वों से उनकी फिल्मे महरुम होती है। वह खुराक हमारी फिल्में ही हमारे दर्शक को देती है,इसलिए हिंदी और हिंदुस्तान फिल्मों पर कोई आंच नही आने वाली है। जहां तक जन्मदिन का सवाल है तो मां- बाबूजी की यादें 'प्रतीक्षा' में ही है... हर बार जन्मदिन पर उनका आर्शीवाद लेते है। कल करवाचौथ था। मैं हर बार व्रत रखता था पर अब कुछ दवाए खानी होती है तो उसके लिए भोजन करना पड़ता है.. इसलिए मैने व्रत नही रखा।

सालगिरह का सबसे प्यारा तोहफा आराध्या (पोती) ने दिया । खुद को खुशकिस्मत मानता हूं कि हमारा पूरा परिवार इस मौके पर साथ है। ना जाने ऐसा क्या किया है कि प्रशंसक हमें इतना प्यार और स्नेह देते है.. हम बहुत आभारी है उनके हम अपने काम और सोशल नेटवर्किंग के जरिये उनसे बात कर पाते है। मै अपने प्रशंसको का आभार प्रकट करता हूं। अभिषेक बच्चन ने अपने पिता के जन्मदिनपर ट्विटर पर अमिताभ, जया ऐश्वर्या और बहन श्वेता के साथ की दो तस्वीरे शेयर की।

आशा खबर

आपकी आशा, आपकी खबर

सच का दम

अब आपके शहर इलाहाबाद से प्रकाशित

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI.UPHIN/2014/45465